तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:55, Issue: 09
February - 2025, Price Rs.20/-,
No. of pages-56.

फरवरी-2025
रु.20/-

माघस्त्यैव तु यो देवी! हरं बिल्वेन अर्चयेत्।
बालार्कशशियुक्तेन - विमानेन स गच्छति।।

दि.19-02-2025 से दि.28-02-2025 तक

तिरुपति, श्री कपिलेश्वरस्वमीजी का ब्रह्मोत्सव

दि. 05-12-2024 को तिरुमल में स्थित 'गोगर्भ बांध' के पास ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू जी और अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री सी.एच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस., जी ने भाग लेकर जलदेवता को जल आरती देकर विशेष पूजाएँ समर्पित किए।

दि. 09-12-2024 को ति.ति.दे. के आध्वर्य में आयोजित 'श्रवणम्' नामक संस्था को ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री बी.आर.नायडू जी ने निरीक्षण किया।

दि. 11-12-2024 को तमिलनाडु में स्थित श्रीरंगनाथ भगवान जी को कार्तिकमास एकादशी के दिन ति.ति.दे. की ओर से पवित्र रेशमी वस्त्र को समर्पित करते हुए ति.ति.दे. के कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.

दि. 22-12-2024 को तिरुमल में भक्तगण आवास को सरल पद्धति में प्राप्त करने के लिए गरुडाद्रि नगर काटेज को नवीकरण करके उप पूछ-ताछ कार्यालय को पूजानंतर सुभारंभ करते हुए ति.ति.दे. के ई.ओ. श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस., और अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री सी.एच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस.

दि. 01-12-2024 को तिरुमल में स्थित एस.वी.अन्नप्रसाद न्यास को दान देने के लिए अन्नदान केंद्र में 'कियोस्को' (KIOSK) मिशन को ति.ति.दे. के अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री सी.एच.वेंकय्या चौदरी, आई.आर.एस., जी ने सुभारंभ किया।

दि. 17-12-2024 को तिरुचानूर अन्नदान कांप्लेक्स में ति.ति.दे. के जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., जी ने स्वयं सेवा से चालू करनेवाले 'कियोस्को' (KIOSK) मिशन को प्रारंभोत्सव किया।

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।।

(- श्रीमद्भगवद्गीता - सांख्ययोग २-२३)

इस आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु नहीं सुखा सकता।

अन्निटिकि मूलमनि हरिनेंचरु
पन्निन मायलो वारु बयलु वाकेरु ।।अन्निटिकि।।

प्रकृति बोनुल लोपल जिक्कि जीवुलु
अकट चक्कनि वारमनुकुनेरु
सकल पुण्य पापालसंधि जन्ममुलवारु
वेकलि संसारालके वेडुक पडेरु ।।अन्निटिकि।।

कामुनियेट्ल दगगारेटि देहुलु
दोमटि तम बतुके दोड्ड दनेरु
पामिडि कोरिकलकु बंट्लैनवारलु
गामिडितनाल दामे कर्तलमनेरु ।।अन्निटिकि।।

इतर लोकालनेडि एतपु मेट्ल प्राणुलु
कतल मोक्षमार्गमु गंटिमनेरु
तति नलमेल्मंग पति श्रीवेंकटेश्वर
मतकानन्नुन्नवारू मारुमल पेरु ।।अन्निटिकि।।

संसार के बंधनों में लिपटे हुए जीवों के प्रति चिंता प्रकट की गयी है।

भौतिक प्रकृति, सत्त्व, रज तथा तमो गुणों से युक्त है। जीव तो सदा मुक्त ही होता है। लेकिन जब वह प्रकृति के संपर्क में आता है, तो वह उन अवगुणों के अधीन हो जाता है। विष्णुपुराण में कहा गया है कि जीवों के कर्म ही उनके जन्मों के आधार हैं। इसी भाव को दोहराते हुए अन्नमाचार्य कहते हैं कि पुण्य-पाप रूपी कर्मों का अनुसरण करते हुए, उनके कारण जीव अनेकानेक जन्म लेते हैं। सुख-दुःखों के क्षणिकानंद का भी वे आनंद लेते हैं।

इच्छाओं के अधीन हो, 'सभी कर्मों के कर्ता स्वयं को ही वे मान रहे हैं। 'ढ़ेकी' की तरह जीव अपने कर्मों का फल आप ढ़ो रहे हैं।' अंततः अन्नमाचार्य कहते हैं कि सच में, जगत् का सकल जीव-समूह, अलमेलुमंगपति श्री वेंकटेश की माया में बद्ध होकर इस संसार की परिक्रमा कर रहे हैं।

संकीर्तना सौजन्य - ति.ति.दे. प्रकाशक, अन्नमाचार्य गीत-माधुरी, डॉ.पी.नागपद्मिनी

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसाद ट्रस्ट

तिरुमल, तिरुचानूर में हजारों की संख्या में भक्तों को प्रतिदिन अन्नप्रसाद वितरण की बात भक्तों को विदित ही है। अब ति.ति.दे. अन्नप्रसाद ट्रस्ट भक्तों, दाताओं को दान देने का अवसर देना चाहता है। इसलिए एक दिन दान की योजना प्रवेश कर रहा है।

एक रोजाना खर्च -

1. एक दिन - 44 लाख
2. अल्पाहार - 10 लाख
3. मध्याह्न भोजन - 17 लाख
4. रात्रि भोजन - 17 लाख

तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का अन्नदान ट्रस्ट इस नकद को दाताओं से स्वीकार करने के लिए सिद्ध हो रहा है। दाताओं - व्यक्तियों/कंपनियों/संस्थाओं/ट्रस्टों/संयुक्त ढंग से भी इस ट्रस्ट को दान दे सकते है। 44 लाख दान देने वाले दाताओं को 25 लाख दान देने वाले दाताओं की सुविधाएँ प्रदान की जाएगी। अल्पाहार, मध्याह्न भोजन, रात्रि भोजन का दान देने वाली दाताओं को, 10 लाख दान देने वाले दाताओं की सुविधाएँ प्रदान की जाएगी।

अपनी मर्जी के अनुसार सूचित एक दिन पर अन्नदान कर सकती है।
और दाता का नाम भी अन्नदान केंद्र में डिसप्ले होता है।

अन्य विवरण के लिए संपर्क करें -

उप कार्यकारी अधिकारी (डोनार सेल), आदिशेषु विश्रांति भवन, ति.ति.दे., तिरुमल।
वेबसाइट - cdmc.ttd@tirumala.org / dyeodonorcell.ttd@tirumala.org
दूरभाषा - 0877-2263001 (24X7), 0877-2263472 (कार्यालय समय में)

(सूचना - उपर्युक्त विषयों पर परिवर्तन होने की संभावना है।)

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की
आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेंङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-55 फरवरी-2025 अंक-09

विषयसूची

मधुमास के आनंदोत्साह का पर्व 'वसंत पंचमी'	डॉ.आर.सुमनलता	07
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	11
माघ महीने का महत्व	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	16
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव प्रो.गोपाल शर्मा	19
''महाशिवरात्रि''	डॉ.एच.एन.गौरीराव	21
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	25
मेनका	डॉ.के.एम.भवानी	31
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	33
ऋषि कर्दम	डॉ.जी.सुजाता	34
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	36
भीष्म एकादशी का पवित्रता और मोक्षदा	डॉ.पी.बालाजी	40
''वर्गमूल''	डॉ.वड्डी जगदीश	42
अमरूद	डॉ.सुमा जोषि	45
फरवरी महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - मंत्री की गलती	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - भक्ति से कुछ भी संभव है।	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 31		52

website: www.tirumala.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है।
सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - श्री कामाक्षी सहित श्री कपिलेश्वर स्वामी, तिरुपति।
चौथा कवर पृष्ठ - श्री सरस्वती देवी चित्र।

गौरव संपादक
श्री जे.श्यामला राव, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण,
M.A., M.Phil., Ph.D.,
P.G. Dip. in Ephigraphy, Dip. in Yoga

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, मुख्य-फोटोग्राफर, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

अगर आँखें खोलकर देखोगे... तो सत्य का बोध होगा!

महापुरुषों के अवतार सृष्टि के सभी जीवों के कल्याण के लिए होते हैं। समय के अनुसार विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परमेश्वर विभिन्न अवतार धारण करते हैं, यह हमें पुराणों में देखने को मिलता है। कभी-कभी, केवल अवतार के स्वरूप और स्वभाव के माध्यम से मानवता को अमूल्य संदेश प्राप्त होता है। यही सृष्टि की विशेषता है। इसलिए, भले ही मनुष्य अपने विचारों के अंतर से उलझे हों, भगवान सृष्टि के विभिन्न रूपों और भूमिकाओं को अपनाते हुए भी एक ही हैं, इसे स्पष्ट करने के लिए भगवान ने भगवद्गीता में कहा : 'रुद्राणां शंकरश्चास्मि।''

''रुद्र के ग्यारह रूपों में, मैं शंकर हूँ,'' इस कथन में एक गहरी दार्शनिक दृष्टि और सटीक रूप से सभी कालों के समाज के लिए एक मूल्यवान संदेश छुपा हुआ है।

रुद्र विनाश के देवता हैं, लय के प्रतीक हैं। लेकिन यह तत्त्व भी कभी शंकर बनता है जब इसे एक श्रेष्ठ और शुभ कार्य के लिए उपयोग किया जाता है। वे कंठ में कालकूट विष को रोकने वाले हैं। इस गुण के माध्यम से, मानवता को यह अमूल्य संदेश मिलता है कि कालकूट जैसे संकटों को तात्कालिक रूप से सहना चाहिए, लेकिन इसे अंतर्मन में समाहित कर विनाश का कारण नहीं बनने देना चाहिए। इसी प्रकार, उनके चंद्रशेखर और गंगाधर स्वरूप से यह संदेश मिलता है कि चाहे जीवन में कितने भी संकट क्यों न आएँ, बुद्धि को शांत और स्थिर बनाए रखना चाहिए।

वे दिगंबर हैं, भोग-विरक्त हैं, सर्वेश्वर और स्थिर हैं। ये सभी गुण उनकी विषय-निरासक्त, कठोर तपस्या और अपने आश्रितों के प्रति करुणा को दर्शाते हैं। यह वही कर्मयोग है जिसे भगवद्गीता में भगवान ने समझाया है। यदि मनुष्य इन गुणों का थोड़ा भी अनुसरण करता है, तो वह एक पायदान ऊपर चढ़ जाता है। जैसा कि कहा गया है, ''समाज के कल्याण के लिए अपने पास की संपत्ति का उपयोग करो, न कि केवल अपने स्वार्थ के लिए।'' यह सामाजिक मूल्यों का पाठ हमें शंकर से सीखना चाहिए।

वे त्रिनेत्रधारी हैं। पर्वत से लेकर परमाणु तक उनका विश्वरूप सत्य का स्वरूप है। इसे देखने के लिए, हर मनुष्य को अपनी भौतिक इच्छाओं को जला देने वाली ज्ञान-दृष्टि खोलनी होगी और अपने मन को आत्ममंथन की ओर मोड़ना होगा। उनके अर्धनारीश्वर स्वरूप से यह शिक्षा मिलती है कि धर्म और आध्यात्मिक प्रगति के लिए, शक्ति और ऊर्जा का संतुलन आवश्यक है।

इस प्रकार, पुराणों के देवता विभिन्न अर्थों और मानव कल्याण के संदेशों से भरे हुए हैं। यदि सत्य की खोज में आगे बढ़ा जाए, तो अमरत्व का स्वरूप अवश्य प्रकट होगा।

मधुमास के आनंदोत्साह का पर्व 'वसंत पंचमी'

- डॉ.आर.सुमनलता

अनादि काल से भारत में बारह महीनों को षड्ऋतुओं में विभाजित किया गया है। आज तक हम अपनी संस्कृति को बचाते हुए अपने भारतीय पंचांग के आधार पर तीज, त्योहार, पर्व आदि मनाते आ रहे हैं। दैनिक जीवन के कार्यकलाप और कर्तव्य निर्वाह के लिए विश्व भर में प्रचलित कैलंडर का अनुसरण भी कर रहे हैं।

भगवद्गीता के विभूतियोग में, योगेश्वर श्रीकृष्ण ने घोषणा की कि - ''ऋतूनां कुसुमाकरः।'' अर्थात् ''ऋतुओं में वसंत ऋतु मैं हूँ।'' मधुमास के नाम से विख्यात वसंत ऋतु में समस्त चराचर प्रकृति, सुन्दर जीवन का आश्वासन देती है। प्रकृति के कण-कण में, हरियाली में नवीन शोभा के दर्शन करते ही, सारे प्राणियों में नवोत्साह का संचार होता है। वसंत ऋतु की प्रकृति के रंग, रूप और उल्लास का स्वाद लेते हुए हमारे मन में परमात्मा के प्रति श्रद्धा और आभार के भाव आ घेरते हैं, क्योंकि परमात्मा ने हम पर कितनी अब्याज करुणा को बरसाया है। हमारे जीवन का आधार बनाया है प्रकृति को।

'किसलयों का आगमन
नाना वर्णों के कुसुमों का विकसन
मधुवन सा जीवन का आश्वासन
'नव' रस-राग-रंगों का आस्वादन।।'' (स्वरचित)

मधुमाह के हर्षोल्लास का आनंद उठाने और अभिनंदन करने वाली तिथि है ''वसंत पंचमी''। इसे ही ''श्री पंचमी'' और ''मदन पंचमी'' भी कहा जाता है। वसंत ऋतु के आगमन का स्वागत करने की तैयारियाँ प्रायः 45 दिन पहले से ही हो जाती है। अर्थात् माघ शुक्ल पंचमी को वसंत पंचमी के नाम से विशेषकर भारत के उत्तरी प्रदेशों में मनाने की प्रथा है।

जिस प्रकार से तेलुगु भाषी, धनुर्मास के आरंभ से (मार्गशीर्ष मास-जिसे भी परमात्मा ने ''मासानां मार्गशीर्षोस्मि'' कहकर, श्रेष्ठ घोषित किया है।) (रंग-बिरंगी

रंगोलियों से अपने आंगन को सजाकर गोपियों का स्मरण करते हुए बीच में गोबर की बनी छोटे-छोटे टीले जैसे आकारों का रंग-बिरंगे फूलों से पूजा कर, सजाती हैं और उनके उपले बनाकर, भोगी के दिन आग में डालती हैं। ठीक उसी प्रकार से मथुरा और बृन्दावन प्रदेशों में श्रीपंचमी अथवा वसंत पंचमी से ही ''होलिका'' दहन के लिए आवश्यक, पुरानी झडी हुई लकडियों को समेटना आरंभ होता है। इसीलिए यहाँ इसे ''पचास दिनों का होली महोत्सव'' कहा जाता है।

माघ शुक्ल पंचमी के इस वसंत पंचमी के दिन विद्या की अधिष्ठात्री देवी ''माता सरस्वती'' के जन्मदिन के रूप में मनाया जाता है। जिस प्रकार से विजयदशमी पर्व पर शस्त्रास्त्रों की पूजा की जाती है, उसी प्रकार से वसंत पंचमी के दिन कवि-कलाकार और शिक्षाविद् अपने-अपने उपकरणों की पूजा कर, माता शारदा की वंदना करते हैं। इसीलिए वसंत पंचमी के दिन भी बच्चों का अक्षराभ्यास ''ॐ नमः शिवाय सिद्धं नमः'' से करते हैं और अपने

तिमिरांधकार रूपी अज्ञान जड़ता को हारने की प्रार्थना, ''निश्शेष-जाढ्यापः'' के रूप में करते हैं। किसी भी नई विद्या या कला को सीखने के लिए वसंत पंचमी को श्रेष्ठतम दिन मानने की प्रथा अपने पास पीढियों से चली आ रही है।

''ॐ सरस्वती विझ्महे। वीणनादाय धीमही।
तन्नो ज्ञानः प्रचोदयात्।।''

शिशिर ऋतु के आरंभ में माघ शुक्ल पंचमी वसन्त पंचमी, शुक्ल सप्तमी को रथसप्तमी मनाते हैं तो समापन शुभकर शिवजी के लिए समर्पित महाशिवरात्रि से होता है। यहाँ तक आते-आते हम अपने चारों ओर के वातावरण में बदलाव देख सकते हैं। झर रहे पत्ते, नव पल्लवों का स्वागत करते हैं। अगर इन त्योहारों के सिलसिले को बारीकी से समझ सकें तो जीवन का अनमोल सत्य उभरता है कि - जीवन की कठिनाइयों को पार करते हुए, अगर हम विद्या की अधिष्ठात्री देवी शारदा माता की आराधना करते हैं और निरंतर ''कर्मसाक्षी'' के समान हम भी अपने कर्तव्य कर्मों का निर्वाह करते जाते हैं तो सबकुछ शुभ-लाभ और कल्याणकारी होगा।

भगवान श्रीकृष्ण की जन्मभूमि मथुरा और बृन्दावन में इस दिन माँ सरस्वती की पूजा के साथ-साथ, राधा-कृष्ण भी पूजे जाते हैं। आगामी रंगों का पर्व, होली का भी आरंभ हो जाता है। वसंत पंचमी को श्रीश्याम सुन्दर जी के प्रकट होने के दिवस के साथ-साथ उनके राधारानी के साथ विवाह का शुभ दिन भी माना जाता है और उत्सव मनाया जाता है। चारों ओर गेंदा और सरसों के फूलों के साथ-साथ कई प्रकार फूल की मनोरम सजावट के दृश्य मन हर लेते है। मेवा, बेर, रेवड़ी, हलुवा आदि का विशेषभोग लगाया जाता हैं। इस दिन ब्रज प्रदेश के सारे मंदिरों में अबीर और गुलाल उड़ाया जाता है।

संप्रदायिक ग्रंथों में वसन्त मनाये जाने के अनेक प्रसंग मिलते हैं। ''श्रीनाथ जी की प्राकट्यवार्ता''

"श्री हित सुधासागर" आदि में धमार गाने के लिए आदेश हैं - "सदा वसंत रहत बृन्दावन लता लता द्रुम डोले।"

"माघ शुक्ल पंचमी को श्रृंगार समय वसन्त उत्सव धारण कलस धरनौ, बसंती पोषाक श्रृंगार विशेष हो... आज संध्यारती पैकंचित गुलाल उडाये भी जाय, बसंत के पद दोनों समय समाज में होय...."।

"बसंत बंधा वौ चालौ ब्रज की बाल।

आज महा पंचमी माह की, मदन महोत्सव कहिये।।"

वसंत पंचमी से निरंतर दस दिन तक वसंतोत्सव का पद - "मधु ऋतु बृन्दावन आनंद..." गाया जाता है। मंदिरों के साथ-साथ घरों में भी अपनी पूजा की स्थली को साफ कर, लाल या पीला वस्त्र, बिछाते हैं। माँ सरस्वती की प्रतिमा या चित्र को स्थापित करते हैं। पीले रंग का वस्त्र, पीले फूल, रोली, केसर, हल्दी, चंदन और अक्षत से पूजा करते हैं। माँ सरस्वती को धूप-दीप-निवेदन-आरती और स्तोत्र मंत्रों से अपनी शक्ति के अनुसार आराधना करते हैं।

इस उत्सव का एक बड़ी विशेषता यह है कि इस में उपवास, व्रत अथवा दीक्षा जैसे कठिन नियमों का पालन नहीं होता। आगामी रंगों का पर्व होली का स्वात करने के लिए वसंत पंचमी से ही दिन भर संगीत-नृत्य और साहित्यिक वातावरण बनाकर अपने परिवार और मित्रमंडलियों के संग तरह-तरह के पकवान और मिठाइयाँ पकाते हैं और सब एक-दूसरे से बांटकर खाते हैं। कहा जाय तो, "व्यक्ति को समिष्टि" के साथ मिलाने का पर्व है। कई रचनाएं वसंत पंचमी का वर्णन करते हुए कवियों ने लिखा है। सूरदास अपने पद में कहते हैं "सदा बसंत रहत जहाँ बास। हर्ष सदा जहाँ नहीं उदास।।"

इस दिन से प्रकृति में होने वाले बदलाओं को ध्यान में रखकर, पीले वस्त्रों का धारण, पीले पुष्पों से पूजा और रंग के मिष्टान्न बनाकर निवेदन करना प्रमुख रूप से पाया जाता है। माता सरस्वती की पूजा के इस दिन पीले रंग का विशेष प्रयोग इसलिए भी होता है क्योंकि पीला रंग ज्ञान का प्रतीक है।

आज एक महान सांस्कृतिक उत्सव के रूप में विख्यात वसन्त पंचमी के साथ धर्म, इतिहास और साहित्य के साथ-साथ सामाजिकता का भी ताना-बाना है। कहा जाता है कि माता सीता को ढूँढते भगवान श्रीराम और लक्ष्मण इसी दिन शबरी की कुटिया पर पधारे थे और अपनी भक्ति और प्रेम के भावों में डूबी शबरी का भाग्योदय हुआ था। इतनी भाव विभोर हो गयी थी कि उसने चुन-चुन कर, चखे मीठे बेरों को श्रीराम-लक्ष्मण को खिलाया था। इसी के प्रतीक के रूप में आज भी गुजरात राज्य के "डांग" जिले के आदिवासी, वसंत पंचमी के पावन पर्व को बड़ी श्रद्धा से मनाते हैं। वाह! तन्मयता की प्रेम रस धारा से अभिभूत होना, हर एक के वश की बात नहीं।

वसंत पंचमी के प्रातःकाल में पूजा के मंडप में कलश की स्थापना कर, विधिवत रूप से गणेशजी, सूर्य और विष्णु भगवान का आह्वान कर, धन की देवी माता

लक्ष्मी की भी आराधना करने के कारण इस दिन को ''श्री पंचमी'' भी कहा जाता है। मंदिरों में जाकर गुलाल-अबीर, चंदन, पीलेरंग के फूल, अक्षत-रोली, धूप-दीप के साथ भोग लगाकर, आपस में प्रसाद के माध्यम से प्यार और सामाजिक बन्धनों को बांटना उल्लोखनीय है।

''मदन पंचमी'' के नाम से भी प्रसिद्ध इस त्योहार पर प्रेम के प्रतीक रति और कामदेव की भी पूजा करना प्रतीकात्मक मान सकते हैं। अपने-अपने परिवारों की वृद्धि, सुख और आनंद के साथ हो और वह भी नैतिक धर्माचरण के साथ। यही हमारे देश के समाज की महत्वपूर्ण नींव है। क्योंकि स्वस्थ एवं सुदृढ़ समाज की संरचना परिवार से ही होती है। यही मूलाधार है। कविकुल गुरु कालिदास ने अपनी प्रसिद्ध रचना ''आभिज्ञान शाकुंतलम'' में इस पर्व का वर्णन ''मदनोत्सव'' और ''वसंतोत्सव'' के नाम से किया है।

ऋतु से जुड़े इस महान पर्व का सीधा संबंध मानव जाति के जीवन और अस्तित्व के लिए रीढ़ की हड्डी कही जानेवाले कृषक वर्ग से भी है। खेतों में अच्छी फसल देने की प्रार्थना कर, किसान भगवानों के समक्ष जौ, चना, आम जैसे छोटे-बड़े पौधों को और अंकुरों को रखकर, यथा शक्ति पूजा करते हैं। नई फसल से पके भोजन का भोग कृतज्ञता पूर्वक भगवान को लगाकर स्वयं खाते हैं और अन्यों को बांट कर प्रसन्न होते हैं। इस महत्वपूर्ण कार्य को ''नवान्निष्टिकाक्षि'' कहते हैं।

ब्रज प्रदेश में कृष्ण ने अपनी लीलाओं का प्रदर्शन किया था। कृष्ण भक्तों का मानना है कि उन्होंने वासंती महारास का आरंभ इसी वसंत पंचमी के दिन से किया था। इसका स्मरण करते हुए मथुरा और बृन्दावन के मंदिरों में ''वासन्ती प्रसाद'' के नाम से विशेष खीर और छप्पन्न (56) भोग भगवान से आरोग करवा कर, भक्तों में बांटते हैं। आज तक यह विधा चल रही है। हजारों कृष्ण भक्त गोवर्धनगिरि की परिक्रमा करते हैं। इसे ''चौरासी कोस'' की यात्रा कहते हैं। पूरे मार्ग में पग-पग पर चारों ओर पीले रंगों से भरे तोरण और अलंकरणों को देख, दर्शक ''वासन्ती'' वर्ण में तल्लीन हो जाते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं कि, कृष्ण भक्ति में रम जाते हैं।

ज्ञातव्य है कि आनंद और आह्लाद को चारों ओर बिखेरने वाले इस वसंतोत्सव को सामूहिक रूप में मनाने की प्रथा राजा विक्रमादित्य के शासन काल में आरंभ होकर, गुप्तों के समय में समाज में हर्षोल्लास बांटनेवाले सांस्कृतिक उत्सव का रूप धारण कर लिया था।

जब किसी विवाह या अन्य कार्यक्रम को मनाने के लिए अच्छा मुहूर्त निकाल नहीं पाते हैं तो, वसंत पंचमी के दिन बिना किसी झिझक से मना सकते हैं। इसलिए इस दिन को ''अबूझ मुहूर्त'' का नाम पड़ा है। पूरा दिन शुभ होने की मान्यता के कारण अन्नप्रासन, अक्षराभ्यास, विवाह आदि तक निस्संकोच मनाते हैं।

वसंत पंचमी के पावन दिवस पर भारत के उत्तरी भाग में पग-पग पर सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रम संपन्न होते हैं। ''वीणावादिनी वरदे'' के गीत से माँ सरस्वती की स्तुति करनेवाले हिन्दी के प्रसिद्ध छायावदी कवि ''सूर्यकांत त्रिपाठी निराला'' जी का जन्म इसी दिन हुआ था। माता शारदा की कृपा उन पर इतनी बरसी कि आज तक हिन्दी कवि सम्मेलनों का आरंभ अधिकतर इसी गीत के गायन से होता है। हिन्दी साहित्याकाश में एक विलक्षण ''महाप्राण'' कवि के रूप में चमकने वाले कवि निराला हैं।

जीवन की सारी आवश्यकताओं का ध्यान अर्थात् विद्या, धन, कृषि, स्वस्थ, सामाजिक और पारिवारिक जीवन के सभी पहलुओं को स्पर्श कर उनकी महानताओं को घोषित करनेवाला महान उत्सव है ''वसंत पंचमी'' का उत्सव। कविकुलगुरु कालिदास के शब्दों में -

''द्रुमाःसुपुष्पाः सलिलम् सपदम्
स्त्रियः सकामाः पवनः सुगंधिः।
सुखाः प्रदोषाः दिवशाश्चरम्याः
सर्वं प्रिये चारुतरम् वसन्तौ।।''

(गतांक से)

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

चतुर्थ आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी

श्री वेंकटेश्वर का फिर से वैकुंठ पहुँचना :

प्राकृत जनों के मन में वास करते हुए धरती पर रहनेवाले श्री वेंकटाद्री विभ और परग अप्राकृत प्रभाओं से दीपित होकर मिहिराब्ज कांतियों से वराह स्वामी चमकते रहे। बहुरत्न गोपुर और प्राकार, चमकनेवाले चार द्वारों के साथ, महनीय मरकत मणि तोरणों से शोभित वैकुंठ पुर का स्मरण करके वहाँ के नित्य, मुक्तियों को देखने की इच्छा से वेंकटाद्री विभ 'शेषाद्री को शुभ्रघोणी के रूप में पालन करो।' बताकर, उन्हें उसे सौंप कर स्वयं मायानिगूढ विमान पर बैठ कर श्रीदेवी, भूदेवी और नीलादेवी समेत श्री वेंकटेश्वर वैकुंठपुर चले गए। वहाँ नित्य शूरों को देख कर, उनका आदर करके अप्राकृत मणिमय अंत:पुर में शेषशय्या पर बसे। तब शेषाद्री पर रहनेवाले वराह स्वामी विश्वकर्मा के द्वारा निर्मित नगर को अंतर्धान करके स्वेच्छा से वन विहार करते रहे। बाद में वृषभासुर से युद्ध करने निकले। इस प्रकार कुछ वर्ष बीत गए। फिर एक दिन नारद वेंकटाद्री पर आकर श्रीनिवास के वैकुंठ लौट जाने का वृत्तांत सुन कर सत्यलोक जाकर ब्रह्म को नमस्कार करके इस रूप में कहा।

नारद के द्वारा ब्रह्म से बात करना :

''हे जनक! सुनिए। चक्री शेषाचल में वराह स्वामी को मनाकर शेषाचल को उन्हें सौंप कर स्वयं वैकुंठ लौट गए हैं।'' कहने पर ब्रह्म की समझ में कुछ नहीं आया। वे सोच में पड गए। फिर नारद से इस रूप में कहा। ''सुनो हे नारद! भूलोक में शेषाचल में पुरुषोत्तम के रहते समय जन अत्यंत सात्विक अतिपुण्यात्मक बने हैं। बाद में स्वामी के वैकुंठ से आने से श्री वेंकटाद्री पर मैं संकल्प करके बडे उत्साह से बडे पैमाने पर रथोत्सव कराया। वराह स्वामी अकेले उस का समर्थन नहीं किया। श्रीनिवास को वहाँ रहना है। इसलिए वासुदेव फिर से दशरथ के पुत्र के रूप में धरती पर पैदा होंगे। जिस रूप में वसुदेव और देवकी के गर्भ में चक्री पैदा हुए थे। उसी रूप में कौसल्या के गर्भ से चक्री पैदा होंगे। हे मौनी! उसी रूप में आगे श्रीनिवास बांबी में शीघ्र ही पहुँचने के मार्ग के बारे में सोचिए। श्रीनिवास के फिर से गिरि पर

पहुँचने के बाद पहले की रीति में रथोत्सव को जनहित में शाश्वत रूप में मैं कराता रहूँगा।

धरती पर श्रीनिवास के न होने से मनुष्य दुष्ट बनते हुए कलि की माया से सत्कर्म श्रद्धा से नहीं करते हैं। इसलिए श्रीहरि फिर से शेषगिरि पर लौटकर मनुष्यों की रक्षा करने के उपाय के बारे में नहीं सोचेंगे तो जन के पाप बढकर नरक में जाएंगे। इसलिए भूत दया को मन में रखते हुए माधव को फिर से इस पर्वत पर पहुँचाने के उपाय के बारे में सोचो।'' ब्रह्म की इन बातों को सुन कर मुनिश्रेष्ठ नारद ने आदरता के साथ ब्रह्म के चरणों को प्रणाम किया।

नारद के द्वारा यज्ञ करनेवाले मुनियों से प्रश्न करना :

शरदभ्र शुभ्र लस्कांति से निज देह के चमकने पर, अरुण वर्णकलित जटाजूटों से शोभित, कलंकहीन पूर्णचंद्र के रूप में, बिजली के तार के समान भुजा पर यज्ञोपवीत के चमकते श्रीहरि की अनुमति लेकर तब नारद जाह्नवी नदी के तट पर पहुँच गए। वहाँ कश्यपादि मुनियों के द्वारा किए जानेवाले यज्ञ को सादर देखा। वीणा को बजाते हरि गान करते आनेवाले नारद के यज्ञवाटिका में आने को मुनियों ने देखा। कश्पादि मुनियों ने उचित ढंग से नारद की पूजा करके विनति की। 'हे देव मुनि! आप के यहाँ पर आने से हमें बहुत संतोष हुआ है।'

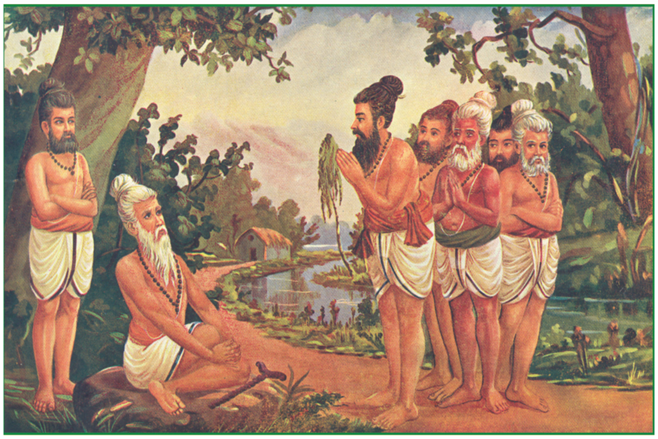

यह सुन कर मोद से नारद ने कहा। ''हे मुनिवर्य! आप यज्ञ करके यज्ञ फल को किन्हें अर्पित करेंगे? उस रीति के बारे में मुझे बताइए।'' तब मुनिवर्य संशय में पड गए।

तब वे अपने भृगु मुनींद्र से अपने आप वितर्क करते, यज्ञफल को स्वीकार करनेवाले देव को निर्धारित करके बताने में असमर्थ होकर कुछ बोले बिना चुप रहे। तब उन मुनियों को देखकर महिमान्वित अष्टाक्षरी मंत्रार्थ को वीणा के द्वारा सुना कर नारद ने सानंद इस रूप में कहा। ''हे प्रजापति! आप सत्क्रतु करके जगत के जनों को हित पहुँचाया है। ऐसे यज्ञों से लोक हित होगा। बहुत अच्छा कार्य है। किंतु यज्ञ के फल को मोक्षप्रद देव को समर्पित करना चाहिए। मोक्षप्रद देव त्रिमूर्तियों में ब्रह्म, विष्णु और महेश्वरों में कौन है? इस का पता लगाकर उन्हें यज्ञ फल को समर्पित करना चाहिए। बाकी देवतागण मोक्ष-प्रद नहीं है। इललिए उन के बारे में सोचने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए त्रिमूर्तियों में मोक्षप्रद देव को चयन करके यज्ञफल को समर्पित करके संतोष कीजिए।'' इस रूप में नारद हितोक्तियाँ मुनियों को बताकर अपनी वीणा को बजाते, परमतत्व का स्मरण करते त्रिलोक विचरण के लिए निकल पडे। तब ब्रह्म ने धरती पर शेषाचल में वल्मीक, तिंत्रिणी वृक्षों का निर्माण करवाया। तदूपरांत।

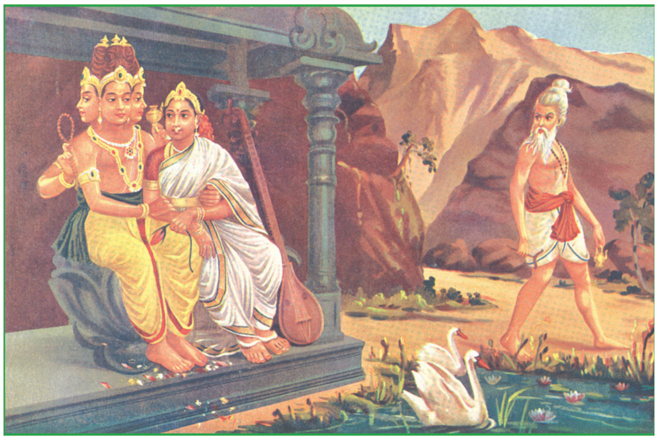

भृगु के द्वारा त्रिमूर्तियों की परीक्षा लेना :

महान नारद की हितोक्तियों को सुनने के बाद उन के बारे में सोच कर सभी मुनिगण एकत्रित हुए। अपने आप में इस विषय के बारे में सोचने लगे। मूर्तित्रिय में सबसे बडा कौन मोक्ष प्रद है। इस के लिए तीनों की परीक्षा लेना ही उचित है समझा गया है। साथ ही परीक्षा लेने के लिए अपने में भृगु महर्षि ही उचित है, समझा गया। तब ऐसा निर्णय ''त्रिमूर्तियों में अधिक मोक्षप्रद कौन है?'' परीक्षा लेने का कार्य भृगु को सौंपा गया। तब भृगु सर्व प्रथम सत्यलोक गए। वहाँ तपो जनों से परिवेष्ठित ब्रह्म को देखकर उनको प्रणाम किया। ब्रह्म ने उन्हें बैठने के लिए नहीं कहा। भृगु ने इसे अपना अपमान समझा। मन में उन को बहुत गुस्सा आया। अपने गुस्से को अंदर ही दबा लिया। ब्रह्म के द्वारा बातें न करने से अंदर ही अंदर 'यह ब्रह्म रजोगुणवाले हैं। ऐसे रजोगुणवाला मोक्षप्रद नहीं बन सकता है। इसलिए इन्हें भूलोक में मंदिर न हो।' ऐसा निर्णय करके शीघ्र ही वहाँ से निकल कर कैलास गए। वहाँ पार्वती के साथ क्रीडा करनेवाले परमशिव के सामने खडे हो गए। अचानक भृगु को सामने देखकर पार्वति लज्ञित हो गयी। तब शिव ने 'अन्यों को इस रहस्य स्थल पर बिना अनुमति के आना क्या उचित है।' मन में सोचते हुए गुस्सैल नेत्रों से भृगु को देखा। शिव के बातें न करने से 'ये तमोगुण प्रधान है। इसलिए ये भी मोक्षप्रद नहीं है। ऐसे को भूलोक में शरीर की पूजा नहीं होगी, सिर्फ लिंग पूजा होगी।' ऐसा निर्णय भृगु अंदर ही अंदर करके वहाँ से वैकुंठ गए। वहाँ शेष शयन पर लक्ष्मी के साथ शयनित होनेवाले विष्णु को देखा। वहाँ भी भृगु का आदर नहीं हुआ। तब भृगु ने गुस्से में श्रीनिवास के वक्षःस्थल पर लात मारी। तब हरि तुरंत उठकर भृगु को नमस्कार किया। अर्घ्य, पादादि पूजा करके उचित आसन पर बिठाया। अपने वक्षःस्थल पर मारनेवाले पैर को अपने जांघ पर रखकर विष्णु भृगु के पैर दबाने लगे। फिर मंदस्मित होकर भृगु की तरफ देखकर इस रूप में कहा। ''हे मुनीश्वर! आप के आने के बारे में मुझे पता नहीं था। इसलिए मैं सो गया था। इसलिए मुझ से अपराध हो गया। मुझ पर न रूठ कर अब आप मुझ पर कृपा कीजिए। मेरे अपराध के लिए उचित रीति से मुझे आपने मारा है। यह मुझे पसंद आया। किंतु मेरे कठोर वक्ष पर मारने से आप के पैर को कितनी पीडा हुई? इस के लिए मैं क्या उपाय करूँ? आप के बहुत कोमल नयी कोंपल जैसे पैर हैं। इसलिए मुझे वक्ष पर कोई दर्द नहीं हुआ। कमल के स्पर्श जैसा आप का पदाघात मेरे लिए भूषण बन गया। किंतु कठोर वक्ष पर लगने से आप के पैर को अवश्य पीडा हुई होगी।'' कहते हरि ने उस मुनि के पाद का प्रक्षालन किया। तब उस तीर्थ को सिर पर धारण करके फिर इस रूप में कहा। ''वर विप्रों के पद रेणु को बडी इच्छा से मैं सिर पर धारण करता हूँ। आज आप के

पदाघात से उस इच्छा की पूर्ति हो गयी। हे धरणी सुरवर्य! मैं धन्य हो गया।'' हरि की इन बातों को सुन कर भृगु को आनंद हुआ। मन में भय और भक्ति के उदय होने से श्रीहरि को देखकर लज्ञा से सिर झुका कर भृगु ने इस रूप में कहा। ''हे शाश्वत सद्गुण मूर्ति! तुम को छोड कर और कौन इस रूप में रक्षा कर सकता है? आप की स्तुति करना मेरे लिए संभव नहीं है।''

भृगु ने ऐसी विनति की। तदुपरांत भृगु ने हरि से बिदाई ली। गंगा नदी के तट पर यज्ञ करनेवाले कश्यपादि मुनियों के पास लौट आये। ब्रह्म, शिव के रजो, तमो गुणों के बारे में और हरि के सत्व गुण के बारे में तथा अपनी परीक्षा लेने के वृत्तांत के बारे में भृगु ने उन्हें बताया। तब संतोष के साथ उन्होंने निर्णय किया कि हरि ही अधिक मोक्षप्रद है। यज्ञ के सकल पुण्य फल को विष्णु को समर्पित करके विष्णु का ध्यान करने लगे।

लक्ष्मी श्रीहरि से प्रणय कलह करके कोल्हपुर पहुँचना :

हरि के वक्ष पर भृगु के लात मारते समय उन के वक्ष पर रहनेवाली लक्ष्मी को अपने निवास स्थान पर लात मारनेवाले भृगु पर गुस्सा आया। उन्होंने रूठ कर हरि को नमस्कार करके इस रूप में कहा। ''परब्रह्म स्वरूप समझ कर आप के वक्षःस्थल पर मैं इतने दिन रही थी। आज इस पर परपुरुष ने अद्भुत ढंग से मारा है। यह आप के लिए संतोष का विषय बन गया। मुझे गुस्सा आया है। अगर उस मुनींद्र से मैं कुछ कहती तो आप को बुरा लगता। इसलिए हे कमलनाभ! अब मैं तप करना चाहती हूँ। मन में आप के चरणों का ध्यान करते हुए कहीं भी तप करने का ज्ञान मुझे दीजिए। निर्मल मन से मैं आप के चरणों में ही रहती हूँ।'' इस रूप में रमासति ने गुस्सा करते हुए सर झुका कर कहा। पुरुषोत्तम ने लक्ष्मी के मन को जानते हुए प्रेम से इस रूप में कहा। ''हे सिरि! तुम उस मुनि के मारने को अपमान के रूप में मत देखो। विप्र के पदाघात वक्ष पर लगना बहु शुभकर ही है। हे कमलाक्षी! तुम मत रूठो।'' हरि की इन बातों को सुन कर लक्ष्मी ने कहा। ''आप आत्माओं के लिए आत्मा हो, विश्व कारण समझ कर आप की पूजा करनेवाले यहाँ पर आकर मारा है। उस मुनि को कौन सी गति प्राप्त होगी? वे अति मूर्ख हैं। उन के बारे में मैं सोचना नहीं चाहती हूँ। हे केशव! आपने मुझे बहुत बडी भेंट प्रदान की है। उसका पिता ब्रह्म आप का पुत्र है। वह उस ब्रह्म का पुत्र है। छोटा-बडा न जानकर अपने को पितामह लगनेवाले को उसने मारा है। उसे छोड देने पर भी, आप को परमात्मा न समझता है क्या? ऐसे मुनि का पाद आप के वक्ष पर लगा है। इसलिए अब मेरा यहाँ पर रहना ठीक नहीं है। मैं कहीं भी रहूँ आप को चित्त में रख कर पूजा करना मेरे लिए अच्छा है। अब मुझे आज्ञा दीजिए हे जगदीश! हे चित्प्रकाश!'' सिरि की इन बातों को सुन कर हरि ने हँसते हुए इस रूप में कहा। ''हे सिरि! ब्रह्म मेरा पुत्र है। वह भृगु मेरा पौत्र है। पुत्र होते मारना बुरा नहीं माना जाता है। बच्चा पेट में रहते हुए माँ को भी मारता है। जिस रूप में माँ प्रेम से फिर उसे नहीं मारती है। वैसे ही प्रेम से मैंने उसे स्वीकार किया है। जीवकोटि को मैं पिता

समान हूँ। इसलिए उन का दोष नहीं मानता। इससे अलग वह ब्रह्म का पुत्र है। सत्ब्राह्मण है। तापसोत्तम हैं। तत्त्ववेदी भी हैं। सचमुच ही उसने मुझ पर भक्ति रखी है। भक्त ही सचमुच मेरे लिए परम प्रिय हैं। भक्त के लिए मैं प्रिय नहीं हूँ। इसलिए मेरे भक्त मुझे मारने से उन की निंदा कैसे कर सकता हूँ। वे मुक्तिमान हैं। मुनिजन मुख्य भी हैं। वे तो मूर्ख नहीं है। हे भामिनी! भेदोक्तियों को छोडकर मेरे हृदय पर शांतिमति बन कर बसे रहो।'' विष्णु की इन बातों को सुन कर लक्ष्मी को बहुत गुस्सा आया। उन के नेत्र रोष से चमके। तब लक्ष्मी ने पति को देखकर कहा। ''हे तामरसाक्षा! सुनिए। परपुरुष के पाद स्पर्श जहाँ लगा है। हे हरि! वहाँ अब मैं नहीं रहूँगी। मेरा पातिव्रत्य धर्म नहीं बिगडेगा क्या? अब आगे आप को मुझ से अलग करनेवाले वंशजों को राक्षसों के लिए आप्त बनेंगे। जरा-मरण से पीडित होंगे। कलियुग में उन के वंशज ब्राह्मण अपने आप को पोषण करने में असमर्थ होकर याचक बन जाएंगे। अपने नित्य कर्मों को भी छोड कर नीचों के सांगत्य में आश्रय प्राप्त करेंगे। गरीब बन कर अपने तोंदू को बढाकर सकल विद्याओं को बेच कर धरती पर जीयेंगे।'' कहते हुए आदिलक्ष्मी ने विप्रों को शाप दिया। फिर हरि को देखकर इस रूप में कहा। ''मारनेवाले विप्र को दंड दिए बिना भेज दिया। आगे आप को कायर समझ कर नीच दृष्टि से देखते हुए कोई ग्वाला भी आप को मार सकता है। धरती पर स्त्रियाँ भी परिहास करते हुए आप पर पथराव कर सकती है। इस के बारे में सुन कर म्लेच्छ (अनार्य) बहुत आसानी से आप पर आक्रमण कर सकते हैं। शांति के कारण से ही हम दोनों को अलग होना पड रहा है। मैं कहीं भी रहूँगी आप को चित्त में बसा कर ही पूजा करती रहूँगी। हे नाथ! किंतु आप के हृदय पर मैं कैसे रहूँगी।'' कहते मन में विचार करते हुए, कुछ अपने को सहलाते हुए, अपने पैर के अंगूठे से जमीन पर खुरचते हुए लक्ष्मी बहुत चिंता करने लगी थी। ऐसी लक्ष्मी को देखते हुए उस के कारण की कल्पना करके विष्णु कुछ बोले बिना चुप रहे। ऐसे विष्णु को देखकर लक्ष्मी ने फिर से कहा। ''हे हरि! क्षमा किए बिना हमारे बीच में इस रूप में उपद्रव करने के बाद मुझ पर दया क्यों करते हैं?'' कहते वैराग्य भाव से कमलनाथ को हृदय में अच्छी तरह बसाकर हरि को नमस्कार करके शीघ्र ही वैकुंठ को छोड कर सुंदर कोल्हापुर पहुँच गयी। कोल्हापुर में भक्त बडी श्रद्धा से उनकी पूजा करने लगे। इससे लक्ष्मी सुस्थिर चित्त से संतुष्ट होकर संतोष के साथ वहीं कोल्हापुर में बस गयी।

इस क्रम में लक्ष्मी और नारायण के बीच में हुए प्रणय कलह के कारण लक्ष्मी वैकुंठ छोड कर कोल्हापुर चली गयी। सूत के द्वारा बतायी गयी इस कथा को सुन कर शौनक को और आगे सुनने की जिज्ञासा हुई। इसलिए उन्होंने सूत से यह पूछा। ''श्री नारायण इस रूप में लक्ष्मी से अलग होकर भूदेवी और नीलादेवी के प्रति संपूर्ण प्रेम दिखाते आनंद से रहा करते थे? या सिरि का स्मरण करते दीन बन कर दुखी थे?'' 'हे सूत! कृपया बताइए।' इस रूप में शौनकादि के पूछने पर सूत ने उन से कहा। ''विष्णु भगवान को सिरि से अलग होने का बडा दुख था। बार-बार सिरि का स्मरण करते हुए अपने आप में विरह ताप से वे पीडित थे।''

क्रमशः

माघ महीने का महत्व

- डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

यज्ञयागादि अनुष्ठानों केलिए माघमास सर्वोत्तम माना जाता था। 'अघमु' शब्द का संस्कृत में अर्थ पाप है। 'मघम्' का अर्थ पापों का नाश करनेवाला होता है। यही कारण है कि 'माघमास' हमारे महीनों में विशेष बन गया है। यह माधव प्रीतिकर मास है। चाहें वह शिव हों, विष्णु हो, कोई भी हो। इस माह में गणपति, सूर्य और अन्य देवी-देवताओं की पूजा और व्रत भी किये जाते है। 'माघ विशिष्टता के संबंध में इस महीने के दौरान सुबह स्नान करने का व्रत है। खासकर जब से सूर्य मकरराशि में प्रवेश करता है। माघ मास में यदि कोई व्यक्ति किसी नदी, तालाब, झील, कुंड, कुआ या छोटे से जल कुंड में भी यथाशक्ति स्नान करे तो उसे प्रयाग में स्नान करने के समान ही फल मिलता है। ठंडे से डरे बिना सुबह-सुबह नदी में स्नान करना सबसे अच्छा है।

हिंदू पंचांग के अनुसार पौष शुक्लपक्ष की पूर्णिमा के बाद वातावरण में अंतर्लीन रूप से माघ महीने का शुरुआत होती है। माघ महीने की पूर्णिमा को चंद्रमा माघ और आश्लेषा नक्षत्र में रहता है। इसलिए इसे माघ मास कहते है।

माघ महीने का महत्व :

पौराणिक कथाओं के अनुसार एक बार गौतम ऋषि ने इंद्रदेव से क्रोधित होकर उन्हें शाप दे दिया था। बाद में इंद्रदेव की क्षमा याचना करने पर ऋषि गौतम ने उन्हें शाप से मुक्ति का उपाय बताया। ऋषि गौतम ने इंद्र देव से कहा कि अगर वह शाप से मुक्ति पाना चाहते है तो माघमास में गंगास्नान कर अपने पापों का प्रायश्चित कर इस शाप से मुक्ति पा सकते है। इसके बाद से माघ मास में गंगा स्नान को बेहद पवित्र माना जाता है।

सूर्योदय से पहले किया गया स्नान सबसे शुभ और स्वास्थ्यवर्धक होता है। जैसे चंद्रमा कार्तिका की हवाओं को ठीक करता है, वैसे ही रवि अपनी किरणों से ठीक करता है। इसीलिए वे स्नान के बाद सूर्य को ऊर्जा देते हैं। और ये स्नान 'अघमर्षण' स्नानफल देता है।

दुःख दारिद्यनाशाय श्रीविष्णोः स्तोषनाय च

प्रातः स्नानं करोम्यहय माघे पापविनाशनम्।

मकरस्थे रवौ माघे गोविंदाच्युत माधव
स्नानेनानेन में देव यथोक्तः फलदो भव।

इस प्रकार हर दिन सूर्य को अर्घ्य देना चाहिए। तीर्थ में प्रतिदिन तेल और चौलाई देनी चाहिए। ब्राह्मणों की सेवा केलिए अग्नि जलानी चाहिए। संतुष्टि होने तक भोजन की व्यवस्था की जानी चाहिए। वस्त्र और आभूषणों से सजाकर उभयलिंगी जोड़े को स्नान कराना चाहिए। कम्बल, मृगचर्म, रत्न विविध वस्त्र, ओढ़ने के वस्त्र देना चाहिए। भोजन अपनी शक्ति के अनुसार ही देना चाहिए। एक वेदविद्वान को सोना दिया जाना चाहिए। माघ मासांत में षट्रस का सेवन करना चाहिए।

अरुणोदये तु सम्प्राप्ते स्नानकाले विचक्षणः
माधवाघ्रि युगं ध्यायन् यः स्नाति सुरपूजितः।

ऐसा ब्रह्म पुराण कहता है। अर्थात यदि कोई सूर्योदय के समय नारायण का ध्यान करते हुए स्नान करेगा तो वह देवताओं के द्वारा पूजित होगा।

सवित्रेप्रसवित्रे च परंधाम जले मम।
त्वत्तेजसा परिभ्रष्टं पापं यातु सस्रदा।।

इस महीने में कंदमूल नही खाते है। तिल का दान करें। बर्तन के साथ तांबे के बर्तन में भूरे तिल डालना बेहतर होता है। इस माह में मरने वालों को अमरत्व प्राप्त होगा। इस माह में प्रातःकाल दीप पूजन, तिल से होम, तिल दान, तिल आदि का महत्व है।

माघ माह में त्यौहार

माघ पंचमी को श्रीपंचमी के नाम से जाना जाता है। इस दिन सरस्वती पूजा करना विशेष फलदायी होता है। इसे कुछ क्षेत्रों में वसंत पंचमी पर्व को विशेष रूप में मनाया जाता है। शुद्ध षष्ठी को विशोक षष्ठी, मंदरा षष्ठी, राम षष्ठी और वरुण षष्ठी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन लाल चंदन, लाल वस्त्र आदि से भगवान वरुण की पूजा की जाती है। शुद्ध सप्तमी को रथसप्तमी कहा जाता है। इस दिन सूर्य जयंती मनाई जाती है। लोग जामा के सात 'अर्क' पत्तों को सिर पर रखकर स्नान करें, तो सात प्रकार के पाप दूर हो जाते हैं। इस दिन दालों से रथ बनाने, नए चावल से पायास पकाने, दालों को पत्तों में रखकर सूर्य को अर्पित करने की प्रथा हैं। इस दिन सूर्य ने सत्राजित्तु को आशीर्वाद दिया। जिन्होंने उनकी पूजा की।

तिरुमल में रथसप्तमी का त्योहार पारंपरिक रूप से कलियुग के वैकुंठ श्री वेंकटाचलक्षेत्र में मनाया जाता है। रथसप्तमी के दिन भगवान तिरुमलेश हजारों भक्तों के साथ सूर्य जयंती का उत्सव धूमधाम से मनाते है। उस दिन सुबह से शाम तक सात पहाड़ियों के भगवान सात अलग-अलग वाहनों में जुलूस निकालते हैं। सबसे पहले, ठीक भोर में भगवान उत्तर-पश्चिम कोने में सात घोड़ों द्वारा खींचे जाने वाले स्वर्णिम सूर्य रथ पर सवार होकर दक्षिणावर्त दिशा में जुलूस निकालने केलिए तैयार होंगे। वे अपने सभी पाँचों हथियारों-शंख, चक्र, गदा, तलवार और धनुष से सुसज्जित होंगे। इसके अलावा उन्हें चम चमाते हीरे-जड़ित रत्नों, नौ-रत्नों के हार और एक चमकदार मुकुट से सजाया जाएगा जो मुकुट से पैरों तक सूर्य की पहली किरणों को प्रतिबिंबित होंगे। भगवान वेंकटेश्वर अपनी पत्नियों श्रीदेवी और भूदेवी के साथ विविधवाहनों पर सवार होकर चार माडावीथियों में जुलूस निकालते है।

1) सूर्यप्रभावाहन, 2) लघुशेषवाहन, 3) गरुडवाहन, 4) हनुमंतवाहन, 5) कल्पवृक्षवाहन, 6) सर्वभूपालवाहन, 7) चक्रस्नान के अलावा चंद्रप्रभावाहन।

इस त्यौहार की खासियत यह है कि भक्त अलग-अलग वाहनों पर सवार होकर बालाजी का दर्शन कर सकते है और उनका आशीर्वाद प्राप्तकर सकते है। ऐसी मान्यता है कि जो लोग इस अनुष्ठान को देखते हैं और प्रार्थना करते है उन्हें कभी भी सूर्य ग्रह दोष और अन्य नवग्रह दोषों से परेशानी नहीं होगी। रथसप्तमी उत्सव को अतीत का 'अर्थ ब्रह्मोत्सव' कहा जाता है।

हमारी वैदिक संस्कृति की भूमि में प्राचीनकाल से ही माघ शुक्ल सप्तमी को रथसप्तमी के रूप में मनाया जाता है।

हमारे पवित्र ग्रंथ सूर्य भगवान को 'कर्मसाक्षी दिवाकरः' के रूप में घोषित करते है। माघ शुक्ल सप्तमी वह दिन है जो सूर्यदेव मुख्य देवता के रूप में पूजा जाता है। इस दिन सूर्य उत्तर दिशा की ओर अपने मार्ग बदलता है। 'आरोग्यं भास्करादिच्छेत्' - शास्त्रों में कहा गया है की अच्छे स्वास्थ्य केलिए सूर्य देव से प्रार्थना करनी चाहिए।

"सूर्य ग्रहण तुल्य सा शुक्ल माघस्य सप्तमी।

अरुणोदयवेलायां स्नानं तत्र महाफलम्।।"

इसका मतलब है कि माघ-शुद्धसप्तमी सूर्यग्रहण के दिन के बराबर है - सूर्योदय से पहले स्नान करना चाहिए और भगवान सूर्यनारायण को अर्घ्य देना चाहिए। अष्टमी को भीष्माष्टमी की जाती है। आज का मुख्य विषय है भीष्म को तर्पण करते है लोग। नवमी के दिन देवी नंदिनी की पूजा की जाती है। इसे माधव नवमी कहा जाता है। अगली एकादशी को जया एकादशी कहा जाता है।

माघमासस्यचाष्टम्यां शुक्लपक्षे च पार्थिव।

प्राजापत्ये च नक्षत्रे मध्यप्राप्ते दिवाकरे।।

भीष्म की मृत्यु माघ महीने के शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि के दिन सूर्य के प्रभाव से ध्यानमग्न अवस्था में हुई। गोब्बेमा (गोबर से बनाये गये गोलियाँ) को सूखा रखना और उन्हें छिपाना और उन्हें तर्पण देने के महीने से उन उपले के साथ पायास पकाना महत्वपूर्ण है। भीष्म ने भगवान कृष्ण की उपस्थिति में श्री विष्णुसहस्रनाम से महिमा करके मोक्ष प्राप्त किया। अतः उनके नाम पर ही एकादशी है। इस तिथि में ही अन्तर्वेदी में लक्ष्मीनरसिंहस्वामी कल्याण मनाया जाता है। वराह द्वादशीव्रत द्वादशी के दिन किया जाता है। त्रयोदशी को विश्वकर्मा जयंती के नाम से जाना जाता है। माघ पूर्णिमा बहुत खास है। इस दिन प्रयाग त्रिवेणी संगम में स्नान करना विशेष फलदायी होता है। माघ पूर्णिमा को देवी सती की जन्म तिथि भी कहा जाता है। माघ पूर्णिमा को महामाघम कहा जाता है। यह एक उत्कृष्ट पूर्णिमा है। महा माघी एक विशेष दिन है। इस दिन समुद्रस्नान को फलदायक के नाम से जाना जाता है। धर्मशास्त्र की सलाह है कि जो लोग माघमास के दौरान हर दिन सूर्योदय से पहले स्नान नहीं कर सकते जो स्नान केलिए महत्वपूर्ण है, उन्हें इस दिन ऐसा करना चाहिए। इस पूर्णिमा पर समुद्रस्नान का विशेष महत्व है। सभी पूर्णिमाओं में माघ, कार्तिक और वैशाख महीनों में आनेवाली पूर्णिमाएँ सबसे श्रेष्ठ हैं।

वैशाखी कार्तिकी माघी तिथ योऽतीव पूजिताः।

स्नानदानविहीनास्ताः ननेयाः पांडुनन्दन।।

सौभाग्यप्राप्ति व्रत माघमास में कृष्ण पाञ्चमी को किया जाता है। सप्तमी व्रत और कृष्ण सप्तमी को सूर्य व्रत किया जाता है। मंगलाव्रत अष्टमी तिथि पर किया जाता है। कृष्ण एकादशी को विजया एकादशी कहा जाता है। और यह तिथि उस दिन की याद दिलाती है जब रामसेतु का निर्माण पूरा हुआ था। तिलद्वादशीव्रत कृष्ण द्वादशी को मनाया जाता है। माघ कृष्ण त्रयोदशी को द्वापरयुग कहा जाता है। माघ कृष्ण चतुर्दशी के दिन महाशिवरात्रि में पर्वदिन व्रत मनाया जाता है। बुजुर्गों का कहना है कि माघमास के अंतिम दिन कृष्ण अमावास्या को पितृ श्राद्ध करना अत्यंत फलदायी होता है।

ऐसा देखा जाता है कि माघमास महीने में कई व्रत, पर्वदिन और विभिन्न देवता मनाए जाते है। इसीलिए शुरुआती दिनों से ही इस महीने का इतना विशेष चरित्र रहा है। ऐसे मान्यता है कि इस पूरे महीने श्रीहरि विष्णु के साथ धन की देवी की उपासना करने से जीवन सुखमय बना रहता है। ऐसी मान्यता है कि माघ के महीने में सामान्य जल भी गंगाजल के समान हो जाता है तभी तो इस पवित्र महीने में तीर्थ, स्नान सूर्यदेव, माँ गंगा और श्रीहरि विष्णु की पूजा का विशेष महत्व है।

माघे निमग्नाः सलिले सुशीते।

विमुक्तपापास्त्रिदिवं प्रयान्ति।।

इसलिए सभी पापों से मुक्ति और भगवान विष्णु की आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रत्येक मनुष्य को माघ स्नान करना चाहिए।

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

पाशुरम 8 कहता है कि नीलकंठ शिव, ब्रह्म और इन्द्र अपनी सहधर्मचारिणियों और अपने परिवार के साथ उनके पदकमलों के दर्शन के लिए लालाइत रहते हैं। उतनी शक्ति और उनकी महानता के न रहने पर भी आल्वार के मन में भी उसी प्रकार की आकांक्षा है। आल्वार स्वयं पादपद्मों के दर्शन की अभिलाषा से ओतप्रोत होकर आये हैं।

[यहाँ पर नम्माल्वार शिव और ब्रह्म में कुछ अंतर बताते हुए ब्रह्म को अधिक महत्ता देते दिखाई पडते हैं। शायद ब्रह्म का विष्णु तनय होना इसका कारण हो सकता है]।

पाशुरम 9 में आल्वार कहते हैं कि वेंकटेश्वर अपने भक्तों के पास तुरन्त पहुँचते है और दुष्टों को दंड करते हैं। वे भगवान को पद्मनयन और चतुर्भुजी कहते हैं। वे अमृत मूर्ति हैं और चिंतामणि हारों से शोभित हैं। एक क्षण के लिए भी आल्वार ऐसे भगवान के दर्शन से दूर होना नहीं चाहते।

पाशुरम 10 में श्री महालक्ष्मी को वक्षःस्थल पर स्थान प्रदान करनेवाले भगवान का स्मरण करते हुए कहते हैं कि वे एक क्षण के लिए भी ऐसे भगवान के दर्शन से दूर हो नहीं सकते हैं। ये भगवान तीनों लोकों (स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल) के अधिनाथ हैं। तिरुवेंगडम् के वासी होकर वे अमरों (देवता, अमर्त्य लोग), ऋषि-मुनियों के द्वारा उपासित हैं।

पाशुरम 11 में आल्वार कहते हैं कि जो भक्त इन पाशुरों को गाता है उसे समस्त फल प्राप्त होंगे।

''तिरुविरुत्त - प्रबन्धम्'' के 8 पाशुरों में आल्वार अपने को भगवान के संपूर्ण भक्त कहते हैं। विरहिणी नारी की मानसिकता में वे दुःख का अनुभव करते हैं। मूर्छित होते हैं। मेघों से अपनी विरह वेदना भगवान तक पहुँचाने की प्रार्थना करते हैं। पाशुरम 50 में आल्वार कहते हैं दिव्य प्रेमी भी अपनी प्रेमिका (भक्तिन) से मिलने के लिए आतुर हैं। वे अपने सारथी से रथ को तेजी से चलाने की प्रार्थना करते हैं। वे अपनी प्रेमिका (भक्तिन) से मिलने के लिए आतुर हैं। उनकी प्रेमिका (भक्तिन) वेंकटाद्रि पर भगवान की प्रतीक्षा में हैं और दुःख भी महसूस कर रही हैं। व्यथा और कातरता से प्रेमिका का वदन सौंदर्य घटता जा रहा है। पाशुरम 18 में आल्वार प्रतीक्षा करनेवाली (भक्तिन) प्रेमिका को मूर्छित अवस्था में पहुँची महिला - आल्वार कहते हैं। उस महिला

की उनकी माता द्वारा चिकित्सा हो रही है। माता नहीं जानती कि उस चिकित्सा द्वारा वह स्वस्थ हो नहीं सकती। वह नहीं जानती कि उनकी पुत्री मर भी सकती है। महिला आल्वार की माता यह नहीं जानती है कि अपनी पुत्री किस ताप से पीडित है। बिना तुलसी तीर्थ दिये और बिना उन्हें वेंगडम् पहुँचाये वे स्वस्थ हो नहीं सकती।

पाशुरम 68 (पेरिय - तिरुवंदादि का) में आल्वार स्पष्ट कहते हैं कि नील घनश्याम भगवान की मूर्ति उनके उर में पैठ गयी है और उनके मन से दूर होना नहीं चाहती है। शायद भगवान ने उनके हृदय को वैगुंडल (वैकुंठम्) समझा है। उनके हृदय को वानाडु (परमपदम्) समझा है। उनको भगवान ने तृणप्राय छोडा और भक्त के हृदय को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। (यहाँ आल्वार वैकुण्ठ और परमपद दोनों को अलग-अलग देखते मिलते हैं। यद्यपि दोनों विष्णुलोक के ही पर्याय हैं।)

13 अन्य मुक्तक रूपी पाशुरों में (तिरुवायमोलि के) नम्माल्वार वेंकटाद्रीश को समुन्नत रूप से वर्णित करते हैं। इनमें से तीसरे और आठवें तिरुवायमोलि में वे स्पष्ट घोषित करते हैं कि मन्नोर (पृथ्वी पर रहनेवाले) और विन्नोर (स्वर्गवासी देवताओं) के लिए भगवान वेंकटेश आँख के लिए पलक के समान रक्षक हैं।

इसी के पाशुरम 9 दूसरे दस के समुदाय के छटवें तिरुवायमोलि में भगवान को संबोधित करते हुए कहते हैं- ''हे तिरुवेंगडम् के भगवान! हे लंका के नाशक! हे सप्त साल वृक्ष भेदी! हे तुलसीमालाधारी! हे सब के लिए अमृत तुल्य! मेरे भगवान! मेरे मालिक! मुझे छोडो मत। तुम्हें छोडकर मैं कहाँ जा सकता हूँ।''

एक और पाशुरम 10 में दूसरे दस के समुदाय के छटवें तिरुवायमोलि में वे भगवान को संबोधित कर पुनः कहते हैं- ''हे त्रिलोकाधिनाथ! हे परमनाथ! हे वेंकटाचलवासी! हे तुलसीमालाधारी! हे मेरे रक्षक और मार्गदर्शक! हे मेरे परमपिता! हे मातृवत्सल हृदयी! मेरे वर्तमान, भूत और भविष्य के रक्षक! मैंने तुम्हें चाहा है, पाया है। मैं तुम्हे कैसे छोड सकता हूँ? कभी नहीं!''

''तिरुवायमोलि'' के द्वितीय दशक के संख्या 7 पाशुरम में आल्वार कहते हैं कि पद्मनाभ कल्पवृक्ष हैं। ये अद्वितीय हैं। उन्होंने आल्वार को अपना बना लिया है। वे दिव्य कल्पवृक्ष सम भगवान से अमृत चाहते हैं। वेंगडम्वासी देवताओं के रक्षक हैं। अपने लिए वात्सल्य बरसानेवाले हैं। दामोदर से वे प्रार्थना करते हैं कि भगवान सब को प्रेम से देखें।

पाशुरम 8 (5 वें तिरुवायमोलि के तीसरे दशक का) में आल्वार कहते हैं जो वेंगडम् के अधिदेव का नाम स्मरण करते हैं उनकी अमर (देवता) प्रशंसा करते हैं, पूजा करते हैं। पाशुरम 1 (9 वें तिरुवायमोलि के तीसरे दशक का) में आल्वार घोषित करते हैं कि स्वामी भृंग नाद से ही संतुष्ट होते हैं। भगवान का हाथी, उनका दिव्य पितृत्व आदि ही उनके पाशुरों के विषय बनते हैं। वे अपनी कविता का अर्पण कर नहीं पा रहे हैं क्योंकि भाव जिह्वाग्र तक आकर रुक जा रहे हैं (यह सब उनकी विशिष्टता का माहात्म्य है कि भगवान भक्त को सही रूप में समझते हैं)।

क्रमशः

मार्च 2025

06-14 तरिगोंडा श्री लक्ष्मीनरसिंहस्वामी का ब्रह्मोत्सव
09-13 तिरुमल श्री बालाजी का प्लवोत्सव
14 श्री लक्ष्मीजयंती, होली, श्री कुमारधारातीर्थ मुक्कोटी
26 अन्नमाचार्य वर्धंती
24-28 नागुलापुरम् श्री वेदनारायणस्वामी का प्लवोत्सव और सूर्यपूजा
27 से अप्रैल 04 तक तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामी का ब्रह्मोत्सव
30 'श्री विश्वावसु' नामक तेलुगु नूतन वर्ष उगादि
31 मत्स्य जयंती

"महाशिवरात्रि"

- डॉ.एच.एन.गौरीराव

महाशिवरात्रि हिन्दुओं के लिए अत्यधिक पुनीत एवं महत्वपूर्ण आध्यात्मिक पर्व है। हर महीने में अमावास्या से एक दिन पहले कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि कहा जाता है। लेकिन फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि 'महाशिवरात्रि' कहलाती है। शिव पुराण, स्कंद पुराण, गरुड़ पुराण, अग्नि पुराण और पद्म पुराण आदि में महाशिवरात्रि के बारे में वर्णन है। इस दिन को 'शिवरात्रि', 'शिव चौदस', 'शिव चतुर्दशी' आदि नामों से भी जाना जाता है।

महाशिवरात्रि पर्व मनाने के संबंध में कई कथाएँ प्रचलन में हैं -

समुद्र मंथन की कथा :

देव और दानव दोनों ने अमृत प्राप्ति के लिए समुद्र मंथन को आरंभ किया। सागर मंथन में सबसे पहले हलाहल विष निकला। इस विष से सारा संसार नष्ट होने का भय था। अतः देव तथा दानवों ने भगवान शिव से रक्षा करने की प्रार्थना की। इससे सृष्टि के रक्षणार्थ भगवान शिव ने उस हलाहल को स्वयं पिया। जब विष कंठ तक पहुँचा तब माता पार्वती ने शिव के कंठ को दबाया। ताकि जहर पेट तक न जाये। इसलिए उनका कंठ काला पड़ गया। इससे वे 'नीलकंठ' नाम से प्रसिद्ध हुए। विष के प्रभाव से भगवान शिव को मुक्त करने के लिए अश्विनी कुमारों ने धतूरा और अन्य औषधियों से उनका उपचार किया। उपचार करते समय शिव को सजग रहना जरूरी था। इससे नृत्य और संगीत का प्रदर्शन किया गया। सुबह होते ही भगवान शिव उन सब से प्रसन्न हो गए और आशीर्वाद दिए। जिस दिन भगवान शिव ने हलाहल को पिया था उस दिन फल्गुन मास कृष्ण चतुर्दशी की तिथि थी। इससे उस दिन को 'महाशिवरात्रि' के रूप में आचरण किया जाता हैं।

लिंगोद्भव की कथा :

एक बार ब्रह्म और विष्णु दोनों अहंकारवश अपने आप को सर्वश्रेष्ठ मानते थे। इस विषय को लेकर दोनों में संघर्ष शुरू हुआ। दोनों अपने वर्चस्व को प्रामाणित करना चाहते थे। इस विषय को लेकर दोनों महादेव शिव के पास गए। इस दोनों के अहंकार को और संघर्ष को मिटाने के लिए महादेव एक अग्निस्तंभ के रूप में प्रकट हुए। इस स्तंभ के आदि और अंत नहीं दिखाई पड़ते थे। आश्चर्य चकित भगवान ब्रह्म और विष्णु दोनों ने अग्नि स्तंभ के सिरों को खोजने का निर्धार किया। इस अग्नि स्तंभ के आदि को देखने के लिए ब्रह्म हंस रूप धारण करके ऊपर आकाश की ओर गए और अंत को देखने के लिए विष्णु भगवान वराह रूप धारण करके नीचे पाताल की ओर गए। जितने दूर जाने पर भी दोनों को आदि या अंत नहीं दिखाई पड़ा। दोनों वापस आकर निराकार रूप की स्तुति की तथा अर्चना की। भगवान शिव ने तब समझाया कि 'वे ही लिंग हैं, जो निराकार हैं; लिंग से सब कुछ निकलता है तथा लिंग में सब कुछ विलीन होता है।' भगवान शिव के निराकार रूप के प्रतीक शिवलिंग का प्रादुर्भाव फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात को हुआ था। इसलिए लिंग के प्रादुर्भाव की रात को 'महाशिवरात्रि' नाम से अनुष्ठान किया जाता है।

शिव-पार्वती विवाह की कथा :

शिवरात्रि आचरण के विषय में एक और कथा शिव पार्वती के विवाह से संबंधित है। एक बार राजा दक्ष ने एक बृहत यज्ञ का आयोजन किया था जिसमें बिना बुलाए महादेव की पत्नी सती भी गई थी। वहाँ पिता दक्ष से अपने पति के प्रति अपमानजनक बातें सुनकर दुःखित होकर माता सती यज्ञकुंड में कूद पड़ी।

बाद में जब सती हिमवंत की पुत्री पार्वती के रूप में जन्मी और निष्ठा के साथ महाशिव को पति के रूप में प्राप्ति करने के लिए घोर तपस्या की। महादेव पार्वती की तपस्या से संतुष्ट हुए। फलतः फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिव और माता पार्वती का विवाह संपन्न हुआ था। उस शुभ दिन को महाशिवरात्रि के रूप में मनाते हैं। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की विशेष उपासना की जाती है। शिव और शक्ति के मिलन का प्रतीक है महाशिवरात्रि।

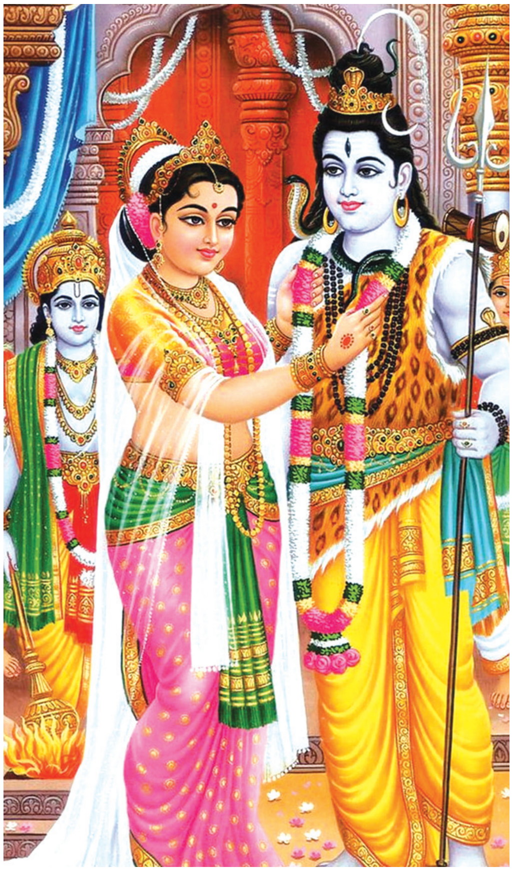

व्रत विधि :

साधारणतया सब त्योहारों में देवी देवताओं को दिन के समय में पूजा की जाती है। परंतु इन सब त्योहारों के विपरीत महाशिवरात्रि को भगवान शिव की पूजा तथा भजन आदि रात के समय की जाने की विशेष आचरण है। महाशिवरात्रि में उपवास, जागरण, ध्यान और आत्म दर्शन के लिए साधना आदि बहुत ही महत्वपूर्ण होते है इससे श्रद्धालुओं को महाशिवरात्रि के दिन अवश्य इनका पालन करना चाहिए।

1. शिव पूजा :

महाशिवरात्रि के अवसर पर भगवान शिव को चार प्रहरों में पूजा करने का विधान है। रात के 12 घंटों की अवधि को 4 प्रहरों में विभाजित किया गया है। तब 3 घंटों का समय एक प्रहर होता है। शिवरात्रि के दिन प्रथम प्रहर की पूजा श्याम 6.00 बजे से 9.00 बजे तक, दूसरे प्रहर की पूजा 9.00 बजे से 12.00 बजे तक, तीसरे प्रहर की पूजा 12.00 बजे से 3.00 बजे तक, चौथे प्रहर की पूजा 3.00 बजे से सुबह 6.00 बजे तक होती है।

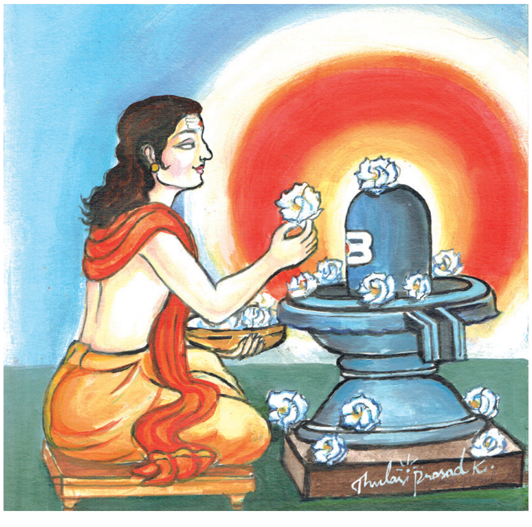

इस दिन सुबह को स्नान के बाद घर पर शिवलिंग की पूजा तथा अभिषेक करना चाहिए। घर पर पूजा के बाद शिव मंदिर जाना चाहिए। शिवरात्रि के दिन देशभर के सभी शिव मंदिरों में भगवान के दर्शन के लिए भक्तों की भारी भीड़ होती है। मंदिरों को विशेष रूप से अलंकृत किया जाता है। शिव मंदिरों में शिवलिंग को पंचामृत अभिषेक के पश्चात चन्दन, पुष्प, अक्षत, वस्त्रादि समर्पित करके रुद्राक्षमाला से अलंकृत किया जाता हैं। तरह-तरह के फूलों तथा पत्रों से पूजा करते हैं। शिव को धतूरा पुष्प तथा बिल्व पत्र से पूजा करना सबसे श्रेष्ठ है। माना जाता है कि माता पार्वती बिल्व पत्र में बसती है। इससे बिल्व पत्र की पूजा से शिव महादेव संतुष्ट हो जाते हैं। शिवलिंग पर अभिषेक के लिए पानी डालने पर लिंग से एक प्रकार की ऊर्जा निकलती है, जिससे नकारात्मक शक्तियाँ दूर हो जाती हैं। अलंकार के बाद आरती की जाती है। इस दिन की रात को शिव की पूजा में शिव पंचाक्षरी मंत्र 'ॐ नमः शिवाय' का स्मरण किया जाता है। निरोगी बनने तथा अकाल मृत्यु से बचने हेतु मृत्युंजय मंत्र का जप किया जात है।

"ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।"

2. उपवास :

शिवरात्रि के दिन हमें कुछ भी नहीं खाना चाहिए। माने दिन भर उपवास रखना चाहिए। उपवास से ईश्वर संतुष्ट हो जाते हैं। उपवास से इंद्रिय निग्रह बढ़ती है और आसानी से ध्यानमग्न हो सकते हैं।

स्वयं भगवान शिव माता पार्वती से कहते है -

न स्नानेन न वस्त्रेन न धूपेन न चार्चया।
तुष्यामि न तथा पुष्पैर्यथा तत्रोपवासतः।।

अर्थात शिव भगवान कहते हैं - 'महाशिवरात्रि को मैं स्नान, वस्त्र, धूप, पुष्प, अर्चना आदि से उतना संतुष्ट नहीं होता हूँ, जितना उपवास से होता हूँ।'

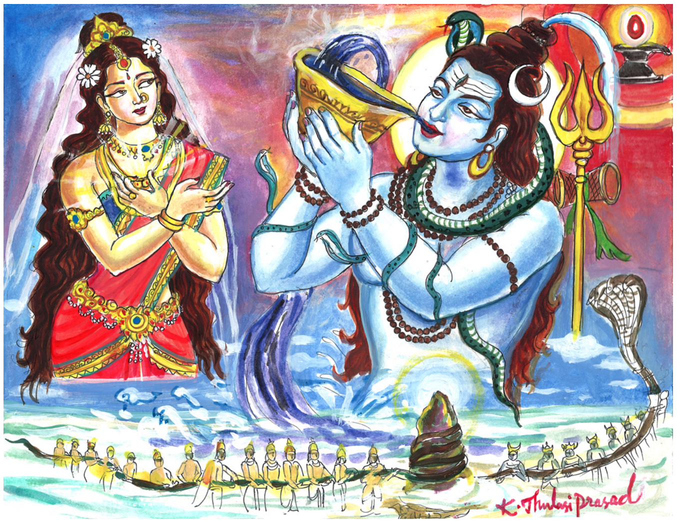

3. जागरण :

महाशिवरात्रि की रात बड़े ही विशेष है। इस दिन रात को नहीं सोना चाहिए। शिवरात्रि के सूर्यास्त से लेकर दूसरे दिन सूर्योदय तक 4 प्रहर जागृत रहना चाहिए। धार्मिक रूप से जो इस दिन जागरण करता है उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। शिवरात्रि की रात को आकाश में ग्रह ऐसे उपस्थित होते हैं कि हम जागरूक होकर स्थिरता से ध्यान मग्न होने पर हमारे भीतर की ऊर्जा प्राकृतिक रूप से ऊपर की ओर चढ़ने लगती है।

महाशिवरात्रि व्रत कथा :

शिवरात्रि कथा में शिवरात्रि व्रत और शिव भगवान की महिमा को बताया गया है। एक बार पार्वती के पूछने पर महादेव इस व्रत कथा को सुनाते हैं - एक समय की बात है कि चित्रभानु नामक एक शिकारी रहता था। वह शिकार करके जीवन यापन करता था। एक बार वह एक साहुकार से ऋण लिया था। पर उसको वह चुका नहीं पा रहा था। इसलिए क्रुद्ध साहुकार ने चित्रभानु को एक शिव मठ में बंदी बनाया। वह दिन शिवरात्रि था।

उस चतुर्दशी के दिन मठ में शिव के बारे में धार्मिक चर्चा होने लगी जिसको चित्रभानु से सुना। शाम को साहुकार ने उसे बंधमुक्त करके ऋण चुकाने को कहकर उसे जाने दिया।

भूखा चित्रभानु शिकार करने जंगल पहुँचा। शाम ढलकर अंधेरा होने का समय था। इसलिए वह एक पेड़ पर बैठकर शिकार करना चाहा। एक तालाब के समीप वह जिस पेड़ पर चढा वो बिल्वपत्र का पेड़ था और उस पेड़ के नीचे एक पुराना शिवलिंग था। पर शिकारी को इस बात का ज्ञान नहीं था। शिकारी चित्रभानु पेड़ पर चढ़ते समय कुछ बिल्वपत्र उस शिवलिंग पर गिर पड़े। इस प्रकार पहले प्रहर की पूजा हुई। शिकारी पेड़ पर बैठकर रात को तालाब में पानी पीने आयी एक हिरणी को मारने को सन्नद्ध हुआ। तब पेड़ की टहनी हिलने से और कुछ पत्र शिवलिंग पर गिरे। इस प्रकार दूसरे प्रहर की पूजा भी हुई। पर वह हिरणी मानव भाषा में बोल कर अपने को छोड़ देने की प्रार्थना की। चित्रभानु ने उसे छोड़ दिया। कुछ देर बाद तीसरे प्रहर में एक हिरणी आयी तथा चौथे प्रहर में भी एक अन्य हिरणी अपने बच्चों के साथ आई। परंतु वे भी शिकारी से अपने को छोड़ने की विनती की और सुबह को वापस आने की प्रतिज्ञा भी की। शिकारी दया करके उन्हें यूं हीं छोड़ दिया। जब कभी वह उनको मारने को सन्नद्ध होता था तब वृक्ष की टहनियां हिलने से कुछ बिल्वपत्र शिवलिंग पर गिरते थे। इस प्रकार चार प्रहरों की पूजा भी पूर्ण हुई। शिवरात्रि के दिन अनजाने ही शिकारी ने शिवरात्रि व्रत को पूर्ण किया। सुबह होते ही हिरणी का परिवार अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार आकर शिकारी के सामने खड़े हो गया। परंतु तब तक शिव की महिमा से शिकारी का मन परिवर्तित होगया था और वह शिव का भक्त बन गया था। उन्होंने हिरणी के परिवार को छोड़ दिया। शिव भगवान की कृपा से शिकारी को मोक्ष की प्राप्ति हुई। स्वयं भगवान शिव कहते हैं कि शिवरात्रि के दिन जो इस कथा का पाठन करता है या सुनता है उसे अपार पुण्य मिलता है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है।

श्री प्रपन्नामृतम्

(53वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

(गतांक से)

श्री गोदाम्बा के अभीष्ट की पूर्ति

प्राचीन समय में श्री गोदाम्बाजी ने एक बार भक्तिपूर्वक भगवान श्रीमन्नारायण के एक स्तोत्र ग्रन्थ की रचना की थी। उस ग्रन्थ में एक सौ चालीस गाथायें हैं। जिसमें एक स्थान पर श्री गोदाम्बाजी द्वारा भगवान से प्रार्थना की गयी है कि- ''हे भगवान! यदि आपने मेरा मंगलमय पाणिग्रहण संस्कार कर लिया तब तो मैं आपके लिये दुग्ध, शर्करा आदि अनेक पदार्थों से युक्त सौ तली (भाण्ड) क्षीरान्न तथा सौ तली मक्खन समर्पित करूँगी।''

उक्त स्तोत्र में लिखित गोदाम्बाजी के अभीष्ट को देखकर यतिराज ने सोचा कि- ''गोदाम्बाजी अपने मनोरथ को पूरा नहीं कर सकीं थीं। मात्र वचन से क्षीरान्न आदि समर्पित किया था।'' अतः श्री गोदाम्बाजी के द्वारा संकल्पित कार्य को पूरा करने का निश्चय करके यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने बनगिरि पर जाकर श्री सुन्दरबाहु भगवान के सामने उक्त पदार्थों का समर्पण किया। यहाँ से आप धन्विनव्यपुरी (श्रीविल्लिपुत्तूर) पधारे और वहाँ वटपत्रशायी भगवान को प्रणाम करके, श्रीविष्णुचित्त स्वामीजी की पुत्री गोदाम्बाजी की सन्निधि में आकर शिष्यों सहित दर्शन कर हाथ जोड़कर खड़े हो गये। अत्यन्त हर्षित होकर गोदम्बाजी ने यतिराज से कहा कि जैसे एक बहिन के संकल्प को भाई पूरा करता है, वैसे आपने मेरे संकल्प को पूर्ण किया है। अतः आप मेरे भाई हैं।

यह कहकर गोदाम्बाजी ने प्रेमपूर्वक यतिराज को अपना भाई मानकर 'गोदाग्रज' नाम प्रदान किया। गोदाम्बाजी का तीर्थ-प्रसाद लेकर आपने वहाँ से कुरुकापुरी के लिये प्रस्थान कर दिया। मार्ग में उस पुरी के समीप जब एक दस वर्षीय श्रीवैष्णव कन्या से आपने कुरुकापुरी का मार्ग पूछा तो वह बोली कि- ''क्या आपने सहस्रगीति का अध्ययन नहीं किया हैं?'' तब यतिराज ने कहा कि- ''हमने तो कुरुकापुरी का मार्ग पूछा है, सहस्रगीति से इसका क्या सम्बन्ध?'' यह सुनकर बालिका ने कहा कि- ''चिञ्चा कुटीर कुरुकापुरी से एक कोस की दूरी पर है, यह बात सहस्रगीति में श्री शठकोप स्वामीजी ने स्पष्ट रूप से लिखी है।'' यह जानकर इस दस वर्षीय बाला के साम्प्रदायिक ज्ञान से अत्यन्त विस्मित होते हुए यतिराज ने प्रेमपूर्वक इस कन्या को अपनी पुत्री की भाँति देखा और पूछा कि- ''हे पुत्री! तुम्हारा घर कहाँ पर है, हमें बताओ?'' प्रसन्न मन से बालिका ने अपना घर उनको बताया और माता-पिता से सब वृत्तान्त कहा। इसके बाद उस बालिका ने यतिराज के लिये भोजन बनाने के नवीन पात्र लाकर उनके समक्ष रखे। यतिराज ने उसके प्रेम को देखकर बर्तन लौटाते हुये परम श्रीवैष्णव जानकर

उनके गृह में प्रवेश किया और उनके माता-पिता के द्वारा शिष्यगणों सहित अत्यन्त सम्मानित होकर और इस बालिका की माँ द्वारा बनाया गया भोजन अपने आराध्यदेव श्री वरदराज भगवान को समर्पण कर उस भगवत्प्रसाद को वेदान्तविज्ञ श्री कूरेश, श्री दाशरथि आदि शिष्यों के साथ सेवन किया और तदीयाराधन कराया। तत्पश्चात् उस बालिका के परिवार के अन्य लोगों से भी मिले। फिर वहाँ की जनता को आपने आदरपूर्वक देवदुर्लभ द्वयमन्त्र का विशेषार्थ सुनाया और समस्त ग्राम-वासियों को सदुपदेश देकर उनके द्वारा सुपूजित हो कुरुकापुरी में आये।

यहाँ श्री शठकोप स्वामीजी एवं आदिनाथ भगवान को प्रणाम कर उनका तीर्थ प्रसाद लेकर आप उस इमली के वृक्ष के नीचे आये जिससे कोटर में श्री शठकोपसूरि विराजमान रहते थे। इस दिव्य चिरकालीन इमली के वृक्ष का दर्शन कर अतिमानुष, गुणशाली, परमश्रेष्ठ, असदृश, अत्यन्त अद्भुत लोगों के आनन्द को बढ़ाने वाले श्री शठकोप सूरि का वैभव देखकर प्रसन्न हो, यतिराज ने श्रीवैष्णवजनों की सन्निधि में सभी लोगों को सुनाकर कहा कि- ''श्री शठकोपसूरि प्रपन्न लोगों के कूटस्थ (मूल पुरुष) हैं। यह ही डूबे हुये अनादिसिद्ध निरुपम इस श्रीवैष्णव-दर्शन का उद्धार करके इसको प्रकाश में लाये हैं। देव-दुर्लभ, अत्यन्त गोपनीय वेद तत्वार्थों का उद्धार कर द्रविड़ भाषा में चार प्रबन्धों की रचना की और उनके द्वारा तत्वज्ञान को सुलभ बनाकर इन्होंने समस्त संसार के उद्धार का उपाय किया।

संसार के रक्षक उक्त महापुरुष का ऋण मैं कैसे चुका सकता हूँ। परम प्रसन्न होकर श्री शठकोप सूरि ने यतिराज को अपनी पादुका का पद प्रदान करके सम्मानित किया। जिसमें यतिराज का नाम 'श्री शठजित्पाद' लोक में प्रसिद्ध हुआ जिस प्रकार भूतल पर श्रीशठारि, भगवान की चरणपादुका के रूप में प्रसिद्ध है, वैसे ही यतिराज श्री रामानुजाचार्य संसार में श्री शठकोप-पादुका के नाम से प्रसिद्ध हुये। तब से श्री रामानुजाचार्य के चरणों की जगह श्री दाशरथि स्वामीजी प्रसिद्ध हुये। इसलिये भगवान श्रीमन्नारायण की सन्निधि में ''मुझे दाशरथि प्रदान करें।'' ऐसा श्रीवैष्णवों को बोलना चाहिये।

इस अत्यन्त गोपनीय अर्थ को जो महान मनुष्य जानते हैं वे ही श्रीवैष्णव तथा मुमुक्षु हैं। इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं। इस प्रकार श्री शठकोपसूरि के दर्शन एवं उनकी अनुकम्पा से यतिराज बहुत ही प्रसन्न हुये और उनका तीर्थ प्रसाद ग्रहण कर श्रीरंगम् लौट आये।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने अपने शिष्य-समुदाय में परम वैदिक धर्म का तत्वज्ञान प्रसारित किया। उन्होंने अपने पास अध्ययन करने वाले लोगों को सनातन धर्म के सात्विक स्वरूप श्रीवैष्णव-दर्शन का उपदेश देकर अन्य अवैदिक सिद्धान्तों का खण्डन करते हुये, मायावाद, देहात्मवाद, अनित्यवाद एवं अनीश्वरवाद तथा ब्रह्म को निमित्त कारण मानने वाले कपिलमुनि के सिद्धान्त का खण्डन कर उपरोक्त वादों के विशिष्ट विद्वानों को शास्त्र में पराजित कर श्रेष्ठ वैदिक धर्म का पुनरुद्धार किया। अनेकों विद्वान् शंख-चक्र लेकर ललाट पर ऊर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करके, कण्ठ में कमलाक्ष एवं तुलसी की माला पहनकर भगवान श्रीमन्नारायण के चरणारविन्दों के सेवक बन, श्री यतिराज के चरणाश्रित बन गये।

।। श्री प्रपन्नामृत का 53वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

श्री सरस्वती पूजा विधान

विद्याओं की देवी है सरस्वती। यह लौकिक एवं पारलौकिक विद्याओं की अधिष्ठात्री देवी है। इस देवी की कृपा से सारी विद्याओं का ज्ञान हमे आसानी से प्राप्त होता है। माघ शुद्ध पंचमी सरस्वतीदेवी का अवतरण दिवस है। यह दिवस वसंत पंचमी के नाम से प्रसिद्ध है। इस दिन वाणी की आराधना करने के माध्यम से विद्या, मेधा की प्राप्ति होती ही है। पाठकों के लिए, खास कर छात्र-छात्राओं के लिए, विशिष्ट उपहार स्वरुप, महासरस्वती पूजा विधान सप्तगिरि की ओर से प्रदान किया जा रहा है।

संकल्प

श्रीमहाविष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्यब्रह्मणः द्वितीयपरार्थे श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वतरे कलियुगे प्रथमपादे जंबूद्वीपे भरतवर्षे भरतखंडे अस्मिन् वर्तमान व्यवहारिक चान्द्रमानेन स्वस्तिश्री...... नाम संवत्सरे .... अयने..... ऋतौ..... मासे.... पक्षे..... तिथौ..... वासरे..... शुभयोग, शुभनक्षत्र एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभतिथौ मम (अस्माकं सहकुटुंबानां) चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्यर्थं सकलविद्यापारंगत्त्वार्थं श्री सरस्वती देवतामुद्दिश्य श्री सरस्वती देवता प्रीत्यर्थं कल्पोक्त प्रकारेण यावच्छक्ति ध्याना वाहनादि षोडशोपचार पूजां करिष्ये।

तदंगत्वेन कलशाराधनं करिष्ये। कलश, गंध, पत्र, पुष्प, अक्षतैः अभ्यर्च्य... कलश पर हाथ रखकर... कलशस्य मुखे विष्णुः, कंठे रुद्रः, समाश्रिताः, मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा, मध्ये मातृगणाः स्मृताः, कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपो वसुन्धरा, ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदोह्यथर्वणः अंगैश्च सहितास्सर्वे कलशांबु समाश्रिताः... कलशोदकेन देवं, आत्मानं, पूजाद्रव्याणि सम्प्रोक्ष्य...

(कलश के जल के छीटों को पुष्प के माध्यम से अपने शिर पर, भगवान पर, पूजाद्रव्यों पर केशव इत्यादि नामों का उच्चारण करते हुए छिड़के)।

ध्यान

पुस्तकेतु यतो देवि क्रीडते परमार्थतः।
तत्र तत्र प्रकुर्वीत ध्यानमावाहनादिकम्।।
ध्यानमेवं प्रकुर्वीत साधको विजितेन्द्रियः।
प्रणवासनमारुढ़ां तदर्थत्वेन निश्चिताम्।।

अंकुशं चाक्षसूत्रं च पाशं वीणां च धारिणीं।
मुक्ताहार समायुक्तां मोदरुपां मनोहराम्।।
कृतेन दर्पणाभ्येन वस्त्रेणोपरिभूषितां।
सुस्तनीं वेदवेद्यां च चन्द्रार्ध कृतशेखराम्।।

जटाकलापसंयुक्तां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्।
त्रिलोचनां महादेवीं स्वर्णनूपुरधारिणीम्।।
कटकैस्स्वर्णरत्नाद्यैर्मुक्तां वलयभूषिताम्।
कम्बुकण्ठीं सुताम्रोष्ठीं सर्वाभरणभूषिताम्।।

केयूरैर्मेखलाद्यैश्च द्योतयन्तीं जगत्रयीम्।
शब्दब्रह्मात्मिकां देवीं ध्यानकर्म समाहितः।।

सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः ध्यायामि।

आवाहन

अत्रागच्छ जगद्वंद्ये सर्वलोकैकपूजिते।
मयाकृतमिमां पूजां गृहाण जगदीश्वरि।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः आवाहयामि।

आसनम्

आवाहिताभव, स्थापिताभव, सन्निहिताभव, सन्निरुद्धाभव, अवकुण्ठिताभव, सुप्रीताभव, सुप्रसन्नाभव, सुमुखीभव, वरदाभव, प्रसीद प्रसीद

कनकमय वितर्धिस्थापिते तूलिकाढ्ये विविधकुसुमकीर्णे कोटि बालार्कवर्णे, भगवति रमणीये रत्नसिंहासनेस्मिन् उपविश पदयुग्मं हेमपीठे निधाय

सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां श्री सरस्वत्यै नमः नवरत्नखचित सुवर्ण सिंहासनं समर्पयामि।

पाद्यम्

गन्धपुष्पाक्षतैस्सार्थं शुद्धतोयेन संयुतम्।
शुद्धस्फटिकतुल्यांगीं पाद्यं ते प्रतिगृह्यताम्।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

भक्ताभीष्टप्रदे देवि देवदेवादि वन्दिते।
धातृप्रिये जगद्धात्रि! ददाम्यर्घ्यं गृहाण मे।।

सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनम्

पूर्णचन्द्रसमानाभे कोटिसूर्यसमप्रभे।
भक्त्या समर्पितं वाणि गृहाणाचमनीयकम्।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः आचमनीयं समर्पयामि।

मधुपर्कम्

कमलभुवनजाये कोटिसूर्यप्रकाशे।
विशद शुचि विलासे कोमले हारयुक्ते।।
दधिमधुघृतयुक्तं क्षीररंभाफलाद्यम्।
सुरुचिर मधुपर्कं गृह्यतां देववन्द्ये।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

पंचामृतम्

दधिक्षीरघृतोपेतं शर्करामधुसंयुतम्।
पंचामृतस्नानमिदं स्वीकुरुष्व महेश्वरि।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि।

स्नानम्

शुद्धोदकेन सुस्नानं कर्तव्यं विधिपूर्वकम्।
सुवर्णकलशानीतैः नानागंधसुवासितैः।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

वस्त्रयुग्मम्

शुक्लवस्त्रद्वयं देवि कोमलं कुटिलालके।
मयि प्रीत्या त्वया वाणि ब्रह्माणि प्रतिगृह्यताम्।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः वस्त्रयुग्मं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

शब्दब्रह्मात्मिके देवि शब्दशास्त्रकृतालये।
ब्रह्मसूत्रं गृहाण त्वं ब्रह्मशक्रादि पूजिते।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

आभरणम्

कटकमकुटहारैर्नूपुरैरंगदाद्यैः।
विविधसुमणियुक्तैर्मेखलारत्नहारैः।।
कमलदलविलासे कामदे संगृहीष्व।
प्रकटित करुणार्द्रे भूरिशो भूषणानि।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः आभरणानि समर्पयामि।

गन्धम्

चन्दनागरु कस्तूरी कर्पूरैश्च सुसंयुतम्।
गन्धं गृहाण वरदे विधिपत्नि! नमोस्तुते।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः गन्धं धारयामि।

अक्षत

अक्षतान् धवलान् दिव्यान् शालीतण्डुल निर्मितान्।
गृहाण वरदे देवि ब्रह्मशक्ति शुभाक्षतान्।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पम्

नन्द्यावर्तादि पुष्पैश्च मल्लिकाभिर्मनोहरैः।
करवीरसुमैः रम्यैर्वकुलैः केतकैः शुभैः।।
पुन्नागैर्जातिकुसुमैर्मन्दारैश्च सुशोभितैः।
नीलोत्पलैः शुभैश्चान्यैः तत्काल तरुसम्भवैः।।
कल्पितानि च माल्यानि गृहाणामरवंदिते!
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः पुष्पैः पूजयामि।

अंगपूजा

श्री ब्रह्मण्यै नमः पादौ पूजयामि
श्री भारत्यै नमः गुल्फौ पूजयामि
श्री जगत्स्वरूपिण्यै नमः जंघे पूजयामि
श्री जगदाद्यै नमः जानुनी पूजयामि
श्री चारुविलासिन्यै नमः ऊरून् पूजयामि
श्री कमलभूम्यै नमः कटिं पूजयामि
श्री जन्महीनायै नमः जघनं पूजयामि
श्री गम्भीरनाभये नमः नाभिं पूजयामि
श्री हरिपूज्यायै नमः उदरं पूजयामि
श्री लोकमात्रे नमः स्तनौ पूजयामि
श्री विशालवक्षसे नमः वक्षःस्थलं पूजयामि
श्री गानविचक्षणायै नमः कण्ठं पूजयामि
श्री स्कन्दप्रपूज्यायै नमः स्कन्धौ पूजयामि
श्री घनबाहवे नमः बाहून् पूजयामि
श्री पुस्तकधारिण्यै नमः हस्तौ पूजयामि
श्री श्रोत्रियबान्धवे नमः श्रोत्रं पूजयामि
श्री वेदस्वरुपायै नमः वक्त्रं पूजयामि
श्री सुनासिन्यै नमः नासिकां पूजयामि
श्री बिन्दुसमानोष्ठ्यै नमः ओष्ठौ पूजयामि
श्री कमललोचनायै नमः नेत्रौ पूजयामि
श्री तिलकधारिण्यै नमः फालं पूजयामि
श्री चन्द्रमूर्त्यै नमः चक्षून् पूजयामि
श्री सर्वप्रदायै नमः मुखं पूजयामि
श्री सरस्वत्यै नमः शिरः पूजयामि
श्री ब्रह्मरूपिण्यै नमः सर्वाण्यंगानि पूजयामि

श्री सरस्वती अष्टोत्तर शतनामावलि

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः
ॐ श्री महाभद्रायै नमः
ॐ श्री महामायायै नमः
ॐ श्री वरप्रदायै नमः
ॐ श्री पद्मनिलयायै नमः
ॐ श्री पद्माक्ष्यै नमः
ॐ श्री पद्मवक्त्रायै नमः
ॐ श्री शिवानुजायै नमः
ॐ श्री पुस्तकधृते नमः
ॐ श्री ज्ञानसमुद्रायै नमः 10
ॐ श्री रमायै नमः
ॐ श्री परायै नमः
ॐ श्री कामरूपायै नमः
ॐ श्री महाविद्यायै नमः
ॐ श्री महापातकनाशिन्यै नमः
ॐ श्री महाश्रयायै नमः
ॐ श्री मालिन्यै नमः
ॐ श्री महाभोगायै नमः
ॐ श्री महाभुजायै नमः
ॐ श्री महाभाग्यायै नमः 20
ॐ श्री महोत्साहायै नमः
ॐ श्री दिव्यांगायै नमः
ॐ श्री सुरवंदितायै नमः
ॐ श्री महाकाल्यै नमः
ॐ श्री महापाशायै नमः
ॐ श्री महाकारायै नमः
ॐ श्री महांकुशायै नमः
ॐ श्री सीतायै नमः
ॐ श्री विमलायै नमः
ॐ श्री विश्वायै नमः 30
ॐ श्री विद्युन्मालायै नमः
ॐ श्री वैष्णव्यै नमः
ॐ श्री चन्द्रिकायै नमः
ॐ श्री चन्द्रवदनायै नमः
ॐ श्री चन्द्रलेखा विभूषितायै नमः
ॐ श्री सावित्र्यै नमः
ॐ श्री सुरसायै नमः
ॐ श्री देव्यै नमः
ॐ श्री दिव्यालंकारभूषितायै नमः
ॐ श्री वाग्देव्यै नमः 40
ॐ श्री वसुधायै नमः
ॐ श्री तीव्रायै नमः
ॐ श्री महाभद्रायै नमः
ॐ श्री महाबलायै नमः
ॐ श्री भोगदायै नमः
ॐ श्री भारत्यै नमः
ॐ श्री भामायै नमः
ॐ श्री गोविन्दायै नमः
ॐ श्री गोमत्यै नमः
ॐ श्री शिवायै नमः 50
ॐ श्री जटिलायै नमः
ॐ श्री विन्ध्यवासायै नमः
ॐ श्री विन्ध्याचलविराजितायै नमः
ॐ श्री चंडिकायै नमः
ॐ श्री वैष्णव्यै नमः
ॐ श्री ब्राहृम्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मज्ञानैकसाधनायै नमः
ॐ श्री सौदामिन्यै नमः
ॐ श्री सुधामूर्त्यै नमः
ॐ श्री सुभद्रायै नमः 60
ॐ श्री सुरपूजितायै नमः
ॐ श्री सुवासिन्यै नमः
ॐ श्री सुनासायै नमः
ॐ श्री विनिद्रायै नमः
ॐ श्री पद्मलोचनायै नमः
ॐ श्री विद्यारूपायै नमः
ॐ श्री विशालाक्ष्यै नमः
ॐ श्री ब्रह्मजायायै नमः
ॐ श्री महाफलायै नमः
ॐ श्री त्रयीमूर्त्यै नमः 70
ॐ श्री त्रिकालज्ञायै नमः
ॐ श्री त्रिगुणायै नमः
ॐ श्री शास्त्ररूपिण्यै नमः
ॐ श्री शुम्भासुरप्रमदिन्यै नमः
ॐ श्री शुभदायै नमः
ॐ श्री सर्वात्मिकायै नमः
ॐ श्री रक्तजनिहंत्र्यै नमः
ॐ श्री चामुण्डायै नमः
ॐ श्री अंबिकायै नमः
ॐ श्री मुंडकप्रहरणायै नमः 80
ॐ श्री धूम्रलोचनमर्दनायै नमः
ॐ श्री सर्वदेवस्तुतायै नमः
ॐ श्री सौम्यायै नमः
ॐ श्री सुरासुर नमस्कृतायै नमः
ॐ श्री कालरात्र्यै नमः
ॐ श्री कलाधारायै नमः
ॐ श्री रूपसौभाग्यदायिन्यै नमः
ॐ श्री वाग्देव्यै नमः
ॐ श्री वरारोहायै नमः
ॐ श्री वाराह्यै नमः 90
ॐ श्री वारिजासनायै नमः
ॐ श्री चित्रांबरायै नमः
ॐ श्री चित्रगन्धायै नमः
ॐ श्री चित्रमाल्यविभूषितायै नमः
ॐ श्री कान्तायै नमः
ॐ श्री कामप्रदायै नमः
ॐ श्री वन्द्यायै नमः
ॐ श्री विद्याधरसुपूजितायै नमः
ॐ श्री श्वेताननायै नमः
ॐ श्री नीलभुजायै नमः 100
ॐ श्री चतुर्वर्गफलप्रदात्रे नमः
ॐ श्री चतुराननसाम्राज्यै नमः
ॐ श्री रक्तमध्यायै नमः
ॐ श्री निरंजनायै नमः
ॐ श्री हंसासनायै नमः
ॐ श्री नीलंजंघायै नमः
ॐ श्री श्रीप्रदायै नमः
ॐ श्री ब्रह्मविष्णु शिवात्मिकायै नमः 108

सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः अष्टोत्तरशतनामपूजां
समर्पयामि।

धूपं

दशांगं गुग्गुलोपेतं सुगंधं सुमनोहरम्।
धूपंगृहाण देवेशि सर्वदेव नमस्कृते।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः धूपमाघ्रापयामि।

दीपं

घृताक्तवर्ति संयुक्तं दीपितं दीपमम्बिके।
गृहाण चित्स्वरूपे त्वं कमलासनवल्लभे।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः साक्षात् दीपं दर्शयामि।

नैवेद्यम्

अपूपान् विविधान् स्वादून् शालिपिष्टोपपाचितान्
मृदुलान् गुडसम्मिश्रान् सजीरक मरीचिकान्
कदली पनसाम्राणां पक्वानिषु फलानि च
कन्दमूलं व्यंजनादि सोपदंशं मनोहरम्।
अन्नं चतुर्विधोपेतं क्षीरान्नं च घृतं दधि
शीतोदकं च सुस्वादु कर्पूरैलादि वासितम्
भक्ष्यभोज्यसमायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः नैवेद्यं समर्पयामि

मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि, उत्तरापोशनं समर्पयामि।
हस्तौ प्रक्षालयामि, पादौ प्रक्षालयामि। शुद्धाचमनीयं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

ताम्बूलं च सकर्पूरं पुन्नागदलैर्युतम्।
गृहाण देवदेवेशि तत्त्वरूपे नमोस्तुते।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

नीराजनम्

नीराजनं गृहाण त्वं जगदानन्ददायिनि।
जगत्तिमिर मार्ताण्ड मण्डले ते नमो नमः।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः आनन्दकर्पूरनीराजनं समर्पयामि।

पुष्पांजलि

शारदे लोकमातस्त्व माश्रिताभीष्टदायिनी।
पुष्पांजलिं गृहाण त्वं मया भक्त्या समर्पितम्।।
या कुंदेंदु तुषारहार धवला या शुभ्रवस्त्रान्विता
या वीणावरदण्डमण्डित करा या श्वेतपद्मासना
या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृतिभिः देवैः सदापूजिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।

प्रदक्षिणा

पाहि पाहि जगद्वन्द्ये नमस्ते भक्तवत्सले।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः।।
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां।
श्री सरस्वत्यै नमः आत्मप्रदक्षिण नमस्कारान् समर्पयामि।।

निम्नलिखित श्लोक को पढ़ते हुए 14 बार परिक्रमा भी कर सकते हैं।

पाशांकुशधरा वाणी! वीणापुस्तकधारिणी।
ममवक्त्रे वसेन्नित्यं दुग्धकुंदेंदु निर्मला।।

चामरम्

चतुर्दशसु विद्यासु रमते या सरस्वती।
चतुर्दशेषु लोकेषु सा मे वाचि वसेत् सदा।।
छत्रं धारयामि चामरं वीजयामि गीतं श्रावयामि
नृत्यं दर्शयामि आन्दोलिकामारोपयामि
अश्वानारोहयामि गजानारोहयामि
समस्त राजोपचार शक्त्युपचार भक्त्युपचारान् समर्पयामि।

दाये हाथ में अक्षत, जल लेकर माता देवी को समर्पित करने की भावना से पात्र में छोड़ दे।

अनया ध्यान आवाहनादि षोडशोपचार पूजया च
सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वती देवता सुप्रीता सुप्रसन्ना वरदा भवतु।
...सांगां सायुधां सवाहनां पतिपुत्र परिवार समेतां
श्री सरस्वत्यै नमः प्रसादं शिरसा गृह्णामि।

... इस प्रकार अर्चन करने के उपरांत अक्षत सर पर डाल लें।

अनुवादक - डॉ.के.सुधाकर राव

मिथ की महिला चरित

मेनका

- डॉ.के.एम.भवानी

भगवान की सृष्टि में माँ बनने का सौभाग्य सिर्फ़ नारी को ही मिला है। हर औरत माँ बनकर और एक प्राणी को जनम देना नारी जन्म की सफलता मानती है तो अखिल लोकों की जननी को माता बन पाना जन्म-जन्मों के सौभाग्य की बात है।

भगवान विष्णु हर अवतार में माँ के गर्भवास करके अवतार लेते रहने पर भी शक्ति स्वरूपा भगवती कई बार अयोनिजा के रूप में ही अवतार लेना पसंद की है। सीता, द्रौपदी आदि अवतारों में माता अयोनिजा है। लेकिन मेनका के भाग्यवश जगदंबा माता पार्वती बनकर उसके गर्भ से जनम ली है। ऐसा भाग्य पाया मेनका की कहानी शिव महा पुराण के अंतर्गत रुद्र संहिता पार्वती खंड में इस प्रकार वर्णित है।

मेनका जगदंबा पार्वती की माता है। हिमवंत (हिमालय) की पत्नी है। पितर और स्वधा (दक्ष प्रजापति की पुत्री) की पुत्री है।

एक बार मेनका अपनी दो बहनों के साथ श्वेतद्वीप में रहे श्री महाविष्णु के दर्शन के लिए जाती है। वहाँ जाकर तीनों बहनें श्रद्धा और भक्ति से भगवान विष्णु की सेवा करती हैं तब भगवान बहुत प्रसन्न होकर उन्हें उचित आसन पर बैठने के लिए कहता है। तो तीनों बहनें बैठ जाती हैं। उसी समय सनक, सनंद आदि महर्षि भगवान विष्णु के दर्शन के लिए आते हैं। तब वहाँ उपस्थित सभी उनके सम्मान में उठ कर खड़े हो जाते हैं। लेकिन तीनों बहनें ऐसे ही बैठी रहती हैं। तो ऋषि गण क्रोधित होकर उन तीनों को मानव जाति में जनम लेने का शाप देते है। तब वे तीनों बहुत दीन होकर अपनी गलती को माफ़ करने के लिए प्रार्थना करने पर ऋषि गण ने शाप विमोचन को इस प्रकार कहा है - कन्याएँ! शांत होकर हमारी बातों को सुनने पर आप खुश होंगी। आप तीनों माताएँ बनकर अपने जन्म को सफ़ल बनाएगी। आप में बड़ी मेनका हिमवंत की पत्नी बनती है तब उस दंपति को माता पार्वती पुत्री के रूप में पैदा होती है।

सनक, सनंद आदि महर्षियों के आदेशानुसार मेनका और हिमवंत की शादी हो जाती है। मेनका और हिमवंत पति-पत्नी बनकर खुशी की जिंदगी बिता रहे हैं। एक दिन उनके पास सारे देव गण आकर इस प्रकार कहते हैं कि जगदंबा गत जनम में सती देवी के रूप में जन्म लेकर शिव से शादी कर ली थी। बाद में कारण वश दक्ष यज्ञ में प्राण त्याग दिया। अब देवताओं को दुष्ट तारकासुर से बचाने के लिए माता सती को फिर से अवतार धारण कर शिव से शादी करना है। वह मेनका और हिमवंत की पुत्री बनकर जन्म लेना चाहती है। इसलिए हिमवंत और मेनका जगदंबा के लिए तप करना चाहिए। कृपालु माता जरूर उनकी चाह पूरी करेगी।

देवताओं की बातों के अनुसार मेनका और हिमवंत तप करने लगे तो उनके तप से प्रसन्न होकर माता जगदंबा प्रत्यक्ष होकर मेनका से इस प्रकार कहती है - मेनका! तुम किस चाह को मन में लेकर मेरी आराधना कर रही हो, वे सब पूरी हो जाएंगी। तब मेनका माता की प्रार्थना करती हुई कहती है कि - देवी! हमारी इच्छा है कि तुम मेरी बेटी बनकर जन्म लेकर भगवान रुद्र से शादी करना है। तब माँ तथास्तु कहकर अदृश्य हो गई।

मेनका ने पहले गर्भ में लड़के का जन्म दिया। वह मैनाक पर्वत है, जो सारे पहाड़ों में अत्यंत बलवान के रूप में प्रसिद्ध है। उसके बाद

माता जगदंबा मेनका के गर्भ में प्रवेश हुई। वसंत ऋतु, चैत्र मास, नवमी तिथि, मृगशिरा नक्षत्र, आधी रात के समय मेनका ने माता पार्वती को जनम दिया। जन्म देते ही मेनका भगवती को पहचान कर प्रार्थना करती है कि माता! मुझसे प्रसन्न होकर मेरी पुत्री के रूप में दर्शन दो। तब माता पार्वती इस प्रकार कहती है कि आप दंपति मुझे पुत्री के रूप में ही मेरी सेवा करके तर जाओगे।

पार्वती जब बड़ी होकर शादी के लायक बन जाती है, तब एक दिन नारद महर्षि हिमवंत के घर आता है और पार्वती की शादी, शिव भगवान से करने को कहता है। तब हिमवंत अपनी पत्नी मेनका के पास जाकर पार्वती को शिव के बारे में तप करके उसको प्रसन्न करने के लिए प्रेरित करने को कहता है। तब मेनका कुसुम कोमल अपनी पुत्री को तप करने की सलाह देने के लिए बहुत व्यथित होती है। पार्वती माता की वेदना को पहचान कर खुद अपने स्वपन को बताती है कि उसे एक योगी स्वपन में दिखा कर शिव को प्रसन्न करने के उपाय बताया है इसलिए अब उसे अनुमति देने पर वह तप करने जाएगी। यह सुनकर मेनका अपने पति हिमवंत को बुला भेजती है। तो वह भी अपने स्वपन को बताकर पार्वती को तप करने जाने की अनुमति देता है।

जब पार्वती का तप सफ़ल होकर शिव उनसे शादी करने को तैयार होता है, तब भी वह खुद एक बार मेनका और हिमवंत की परीक्षा करना चाहता है इसलिए वह एक ब्राह्मण का रूप धारण कर मेनका हिमवंत के पास आकर शिव निंदा करते हुए कहता है कि उन्हें शिव से पार्वती की शादी नहीं करना चाहिए क्योंकि शिव के माता-पिता कौन है? यह बात किसीको मालूम नहीं है। उसका वंश, गोत्र कोई नहीं जानता है। ऐसे व्यक्ति के साथ क्यों पार्वती दुख भरा जीवन बिताना है। यह सुनकर मेनका व्यथित होकर पार्वती की शादी शिव से करने को इनकार करती है और क्रोध कक्षा में जाती है। तब शिव के आदेशानुसार ऋषि वशिष्ठ की पत्नी अरुंधति मेनका की समझने आती है तो मेनका उसे सादर सत्कार करती है। तब अरुंधति सहित सप्तऋषि गण मेनका और हिमवंत को शिव से पार्वती की शादी के लिए मनाने में सफल होते हैं।

जब शिव सारे देवगण के साथ लेकर शादी के लिए दूल्हा बनकर आते है, तब मेनका जमाई को देखने उत्सुक होकर नारद से पूछती है कि बारात में शिव कौन है? कहाँ है? हर एक को देखकर नारद से पूछने लगी कि यही है शिव? लेकिन नारद नहीं, नहीं कहता रहता है। तब शिव फिर अपनी लीला को दिखाते हुए मेनका को पाँच मुँह, तीन आँखें से विकृत रूप में दिखाई देता है। नारद जब उसे दिखाते हुए शिव कहने पर मेनका उस भयंकर रूप को देखकर डरती हुई रोने लगती है और फिर पार्वती की विवाह शिव से करने से इनकार करती है। तब फ़िर नारद के प्रार्थना पर शिव दूल्हे की तरह सुंदर आकार से मेनका को दर्शन देता है। तब मेनका उसके रूप से खुश होकर आरती देती हुई उसका स्वागत करती है और उसे विवाह के मंडप में ले जाती है और खुशी से विवाह करती है। इस प्रकार लोकमाता पार्वती की माता बनकर अपने हाथों से उसे कन्यादान करने का सौभाग्य प्राप्त मेनका का जीवन धन्य हो गया है।

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी

पोत्तरुम् शील त्तिरामानुज, निन्पुहळ् तेरिन्दु
शात्तुवनेल् अदुताळ्वु, अदुतीरिल् उन् शीर् दनक्कोर्
एत्तमेन्ने कोण्डिरुक्किलुम् एन्मन मेत्तियन्नि
आत्तहिल्लादु, इदर्क्केन् निनैवा येन्नि इ्टुवने ॥८९॥

स्तुतिपथातिगदिव्यगुणाम्बुधे भगवान रामानुज! 'यद्यहं भवतो दिव्यगुणान् बुध्वा कीर्तयेयम् हन्त क्षोदीयानहं कीर्तयामीति हेतोः अवद्यं हि स्यात्; अवद्यसंपातभिया यदि न कीर्तयेयम् तर्हि भवद्गुणानामुत्कर्ष एव स्यात्' इति सम्यगवगच्छन्नप्यहं भगवद्कीर्तनं विना स्थातुमशक्नुवन् आत्म-धारणान्यथानुपपत्त्या स्तौमि; अत्र भवदाशयः कीदृश इत्यजानन् भीतभीतोऽस्मि।।

यथार्थ स्तुति करने को अशक्य शीलगुण-परिपूर्ण, हे श्री रामानुज स्वामिन्! मैं तो यह अर्थ ठीक समझ सकता हूँ कि यदि मैं आपके दिव्यगुण जान कर उनकी स्तुति करूँ तो (मुझ नीच से कीर्तित होने के कारण) आपको दोष लगेगा, और यदि मैं स्तुति न करूं, तो ही आपके गुणों की महिमा बढेगी। तथापि मेरा मन (आपके गुणों की) स्तुति किये बिना शांत न हो सकता है। यह सोचता हुआ कि इस विषय में आपका अभिप्राय कौन-सा होगा, मैं बहुत भयभीत हो रहा हूँ। (विवरण-क्षुद्रपुरुषों की स्तुति पाने से महात्माओं की भी महिमा घट जाती है; अतः हम महापुरुषों की स्तुति नहीं करेंगे तो अच्छा होगा। अब अमुदनार कहते हैं कि मैं यह अर्थ ठीक जानता हूँ कि अतिनीच मैं आपकी स्तुति न करूँगा तो अच्छा होगा। तथापि आप पर मेरा प्रेम ऐसा विलक्षण है कि आपकी स्तुति किये बिना मुझे चौन न पडेगा। अतः प्रेम के परवश होकर मैं स्तुति कर रहा हूँ; तो भी मुझे इस बात का डर रहा करता है कि आप इसे कैसे मानेंगे।)

क्रमशः

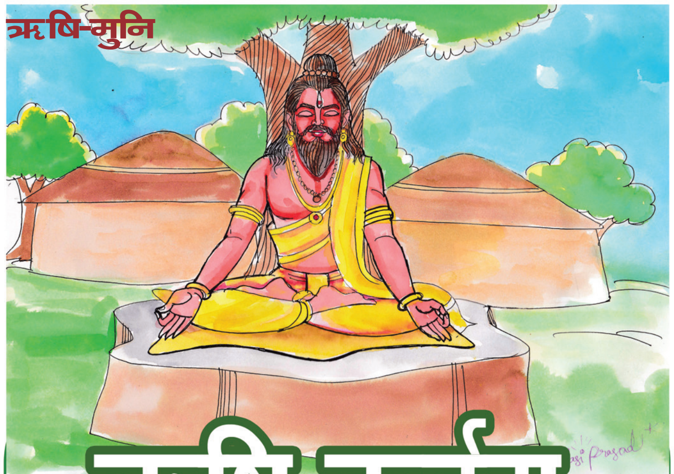

ऋषि कर्दम

- डॉ.जी.सुजाता

हिन्दू धर्म में ऋषियों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। वेदों और पुराणों के अनुसार, ऋषियों ने ज्ञान और धर्म का प्रचार-प्रसार किया। पुराणों के अनुसार ब्रह्माजी के मानस पुत्रों में - मन से मरीची, नेत्र से अत्रि, मुख से अंगिरस, कान से पुलस्त्य, नाभि से पुलह, हाथ से कृतु, त्वचा से भृगु, प्राण से वशिष्ठ, अंगुष्ठ से दक्ष, छाया से कर्दम, गोद से नारद, इच्छा से सनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार, शरीर से स्वायंभुव मनु, ध्यान से चित्रगुप्त आदि की उत्पत्ति हुई।

सृष्टि की रचना के समय ब्रह्माजी की छाया से कर्दम ऋषि की उत्पत्ति मानी जाती है। ब्रह्माजी ने उन्हें प्रजा में वृद्धि करने की आज्ञा दी। यद्यपि कर्दम ऋषि गृहस्थ जीवन को नहीं अपनाना चाहते थे। पिता ब्रह्म की आज्ञा का पालन करते हुए, कर्दम ने सरस्वती नदी के किनारे योग्य पत्नी पाने के लिए 10 हजार साल भगवान विष्णु की तपस्या की थी, जिससे प्रसन्न होकर भगवान विष्णु ने उन्हें गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने का वरदान दिया। तब भगवान विष्णु को ऋषि कर्दम पर करुणा आ गयी कि दस हजार वर्ष तप करने के बाद वरदान माँगा तो विवाह की। मेरा भक्त गृहस्थाश्रम में जा रहा है, जहाँ सुख कम, दुःख ज्यादा हैं। भगवान की आँखों से अश्रुपात होने लगा। इतना अश्रुपात हुआ की उन अश्रुओं से एक सरोवर बन गया। यह सरोवर आज भी गुजरात में 'बिंदु सरोवर' के नाम से जाना जाता है। भगवान विष्णु ने कर्दम ऋषि को एक और वरदान प्रदान किया कि वे उनके यहाँ उनके पुत्र के रूप में जन्म लेंगे।

भगवान विष्णु को अपनी तपस्या से प्रसन्न करके अपने लिए योग्य कन्या की याचना की। भगवान विष्णु ने कर्दम से कहा कि "स्वायंभुव मनु तुम्हारी कुटिया में पहुँचकर अपनी कन्या देवहूति का प्रस्ताव तुम्हारे सामने रखेंगे, जिसे तुम स्वीकार कर लेना।"

महाराज स्वायंभुव मनु एक दिन अपनी पत्नी शतरूपा और पुत्री देवहूति को लेकर कर्दम ऋषि के आश्रम पहुँचकर विवाह का प्रस्ताव रखा। कर्दम ऋषि ने महाराज मनु का आतिथ्य सत्कार किया एवं सबको आसन दिया। मनु और शतरूपा तो आसन पर बैठ गये किन्तु देवहूति सयानी हो चुकी थी। उसने सोचा - 'ये मेरे होनहार पति हैं। अगर उनके बिछाये हुए आसन पर मैं बैठ जाऊँ तो यह पत्नी धर्म के विरुद्ध होगा और अगर अस्वीकार कर दूँ तो उनकी अवज्ञा होगी।'

अतः उस चतुर सुकन्या देवहूति ने न आसन की अवज्ञा की और न ही उस पर बैठी, वरन् अपना दायाँ घुटना और दायाँ हाथ आसन पर रखा, जिससे ऋषिवर का आसन स्वीकार भी हो गया और ऋषि की मर्यादा का पालन भी हो गया।

कर्दम ऋषि ने विवाह करने के लिए एक शर्त रखी थी कि मैं विवाह करने को तो तैयार हूँ, किन्तु पुत्र होने के बाद मैं ब्रह्मचर्य धारण करके संन्यास ले लूँगा। यह सुनकर भी देवहूति ने विवाह के लिए हामी भर दी। देवहूति एवं ऋषि कर्दम के विवाह संपन्न होने के पश्चात् देवहूति अपने पति ऋषि कर्दम के आश्रम में

रहने लगी। ऋषि कर्दम प्रभु की भक्ति में इतना ध्यानस्त हो गए कि उनको याद ही नहीं रहा कि उन्होंने देवहूति से विवाह भी किया है। यद्यपि देवहूति महलों में रहने वाली थी, पति की नित्य सेवा करती थी। जब ऋषि कर्दम की आँखे खुली तो उन्होंने देवहूति से पूछा कि देवी आप कौन हो, इतने दिनों से सेवा कर रही हो, मैं आपकी सेवा से प्रसन्न हूँ, माँगो! क्या माँगना चाहती हो। देवहूति ने कहा कि मैं आपकी पत्नी हूँ, आपका विवाह हुआ है मेरे साथ। आप भूल गए कि आपने मुझे पुत्र प्राप्ति का वचन दिया था। अब ऋषि कर्दम को याद आया कि उन्होंने गृहस्थ जीवन में प्रवेश किया था।

ऋषि ने अपने योग बल से सर्वत्रचारी विमान का निर्माण किया जो संकल्प से चलता था, जिसमें कई कमरे थे और सेवा करने के लिए कई दासियाँ भी थीं। विमान से दोनों ने बहुत सुदूर भ्रमण किया। कई साल तक विमान धरती का भ्रमण करता रहा।

यात्राकाल में ही कर्दम और देवहूति ने नौ कन्याएँ, कला, अनसूया, श्रद्धा, हविर्भू, गति, क्रिया, ख्याति, अरुंधती तथा शान्ति को जन्म दिया। कन्या होने के बाद कर्दम जी ने देवहूति से कहा कि मैं संन्यास धारण कर लूँगा। तब देवहूति ने कहा, भगवन् आपका वचन अभी भी पूरा नहीं हुआ है। आपने पुत्र प्राप्ति के बाद संन्यास लेने का कहा। और अब इन कन्याओं का विवाह भी तो करना है।

कर्दम मुनि देवहूति के विनम्र स्वभाव से प्रसन्न हुए और उन्हें भविष्य के बारे में बताकर सांत्वना दी। भगवान विष्णु स्वयं उनके गर्भ में प्रकट होकर उन्हें सांख्य का ज्ञान देने वाले थे।

कर्दम जी ने भगवान विष्णु से प्रार्थना की कि आपने हमको वचन दिया था कि आप हमारे घर पुत्र रूप में आएँगे। अतः उस वचन को पूरा कीजिए। भगवान विष्णु देवहूति के गर्भ में प्रवेश किया, और कपिल रूप में अवतीर्ण हुए।

कर्दम जी ब्रह्म की प्रेरणा से अपनी सब पुत्रियों का विवाह प्रजापतियों से कर दिया। उन्होंने अपनी 'कला' नाम की कन्या का विवाह मरीचि के साथ किया। 'अनसूया' का कन्यादान अत्रि ऋषि को किया, जिनके यहाँ भगवान दत्तात्रेय अवतरित हुए। 'श्रद्धा' नाम की तीसरी कन्या अंगिरा ऋषि को एवं चौथी कन्या 'हविर्भू' पुलस्त्य ऋषि को समर्पित की। पाँचवीं कन्या 'गति' को पुलह ऋषि के साथ, छठी कन्या 'क्रिया' को क्रतु ऋषि के साथ और सातवीं कन्या 'ख्याति' को भृगु ऋषि के साथ ब्याह दिया। आठवीं कन्या 'अरुंधती' महर्षि वशिष्ठजी को समर्पित किया और नौवीं कन्या 'शांति' का कन्यादान अथर्वा ऋषि को किया।

फिर कर्दम जी ने उन विवाहित ऋषियों का उनकी पत्नियों सहित खूब सत्कार किया। प्रसंग सम्पन्न हो जाने पर वे सब कर्दम जी की आज्ञा लेकर अति आनंदपूर्वक अपने-अपने आश्रमों को चले गये।

कर्दमजी ने देखा कि श्रीहरि ने उनके घर अवतार लिया है, अतः वे एकांत में उनके पास गए और भगवान् कपिल की स्तुति करके उनकी आज्ञा से वन को प्रस्थान किया और भगवद् भक्ति से सम्पन्न होकर परमपद को प्राप्त किया। देवहूति भी कपिल जी से तत्त्वज्ञान का उपदेश प्राप्त करके मोक्ष पद को प्राप्त हो गई।

ऋषि कर्दम का आश्रम :

ऋषि कर्दम का आश्रम, उत्तर प्रदेश के हमीरपुर जिले के कदौरा गांव में है। यह बेतवा नदी के किनारे स्थित है। यहाँ टापू पर केवल एक प्रकार का वृक्ष (कर्दही) का घना जंगल है। जिसके बीच में कर्दम ऋषि का मंदिर है वह कर्दम ऋषि की प्रतिमा है।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया

69) बदरीनाथ (तिरुबदरियाश्रमम्)

हरिद्वार से ऋषिकेश होकर बदरीनाथ पहुँचते हैं। बदरिनाथ एक स्वयं-व्यक्त क्षेत्र है। यह समुद्र तट से 10,600 फुट ऊँचाई पर स्थित है। हरिद्वार से 32 कि.मी. पर है। यहाँ ठहरने आदि की सब सरल की सुविधा उपलब्ध है। बदरीनाथ / केदारनाथ मंदिर समिति की ओर कई यात्री - निवास संचालित हैं।

मूलमूर्ति - बदरिनारायणन्, पूर्वाभिमुखी पद्मासन लगाए, तपस्या निमग्न दर्शन देते हैं। आसीनस्थ।

तायार (माताजी) - अरविन्दवल्लि - लक्ष्मी देवी।

तीर्थ - तप्तकुण्ड।

स्थल वृक्ष - बदरी वृक्ष।

विमान - तप्तकाञ्चन विमान।

प्रत्यक्ष - नरन्।

यहाँ पांच बदरी क्षेत्र निम्न प्रकार है। बसये बदरी के मार्ग में है।

1. आदि बदरी, 2. वृद्ध बदरी, 3. भविष्य बदरी, 4. योग बदरी, 5. बदरीनाथ।

हरिद्वार से रुद्रप्रयाग होकर केदारनाथ जाते हैं। हरिद्वार से 257 कि.मी. दूरी पर है। ऊँचाई - 11,250. केदारनाथ पहुँचने - कुछ दूर घोडे पर जाना है।

यहाँ बदरीनाथ (बदरिकाश्रम) के अलावा, श्री केदारनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री आदि चार दाम उत्तरांचल में स्थित है। हिमालय का यह पवित्र स्थल देव भूमि के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ गन्ध मादन पर्वत के मध्य, पावन अलकनन्दा नदी तट पर यह पवित्र - क्षेत्र स्थित है। यहाँ - नरनारायण ने तपस्या की थी जिससे पर्वत श्रेणी 'नरनारायण' पर्वत प्रंचलित

हो गया। स्वयं भगवान इस क्षेत्र का अपना आश्रम बताते हैं।

यहीं पर स्वयं भगवान नारायण ने नर को 'अष्टाक्षर मंत्र'- 'मूल मंत्र' 'ओं नमो नारायणाय' का उपदेश दिया। इसलिए यह क्षेत्र अष्टाक्षर क्षेत्र नाम से भी प्रसिद्ध है। यहाँ माणा गाँव - मणि बद्रपुर की एक गुहा में भगवान बादरायण व्यास ने महाभारत आदि पुराणों की रचना की जो व्यास गुहा के सामने है। यहाँ की मूर्ति स्वयंभू मूर्ति है। प्रत्येक दिन प्रातःकाल अभिषेक करते हैं। जिस के दर्शन, भाग्य से प्राप्त होता है। बदरी विशाल की चतुर्भुज मूर्ति पद्मासन लगाए, तपस्या निमग्न दर्शन देते हैं।

भगवान के पंचायतन में, नारद, नर, कुबेर, गरुड, उद्धव आदि की मूर्तियाँ (विग्रह) चरण, पादुका, सुदर्शन चक्र आदि दर्शन कर सकते हैं। भगवान की बाईं ओर अखण्ड ज्योति है। मंदिर परिक्रमा के गर्भगृह के सामने (दक्षिण) में लक्ष्मी जी की सन्निधि है।

बदरीनाथ पहुँचकर यात्री तप्त कुण्ड में स्नान कर - दर्शन करने जाते हैं। तप्त कुण्ड मंदिर के सिंह द्वार के सामने है जिसका बहता पानी बराबर गरम रहता है। शीतकाल में नवंबर दूसरे सप्ताह दीपावली से लगभग 6 महीने मंदिर का कपाट बन्ध रहता है। इस अवधि में - नवंबर दूसरे सप्ताह से - मई पहले हफ्ता अक्षय तृतीया तक - परंपरानुसार यहाँ की उत्सवमूर्ति ज्योतिर्मठ (जोषीमठ) के पास (पांडुकेश्वर) पधराते हैं जहाँ नित्य पूजा होती हैं। मई पहले दूसरे सप्ताह में अक्षय तृतीया के बाद मंदिर का कपाट खुलता है। दर्शन उपलब्ध होता हैं।

यहाँ पितरों को पिण्ड प्रदान करने अर्पित करके पहले दिन 15 मंदिरों में जमा करने पर प्रसाद का विवरण इच्छुक यात्रियों के उपलब्ध कराया जाता है। मंदिर से प्रसाद लेकर यात्री पाल पजाकर पितृ तर्पण आदिकर पितरों को पिण्ड प्रदान के देव भूमि में बदरी विशाल के अलावा और चार बदरी है - (पंच बदरी क्षेत्र है।)

1. **बदरी विशाल -** बदरी नाथ।

2. **(योग) ध्यान बदरी -** जोशी मठ से 20 कि.मी. दूर बदरी मार्ग पर पांडुकेश्वर नामक गाँव में पांडु के द्वारा निर्मित योग ध्यानी मंदिर है। गर्भगृह में योग-ध्यानी जी की मूर्ति कमल पुष्प पर आसीन योग मुद्रा में दर्शन देते हैं।

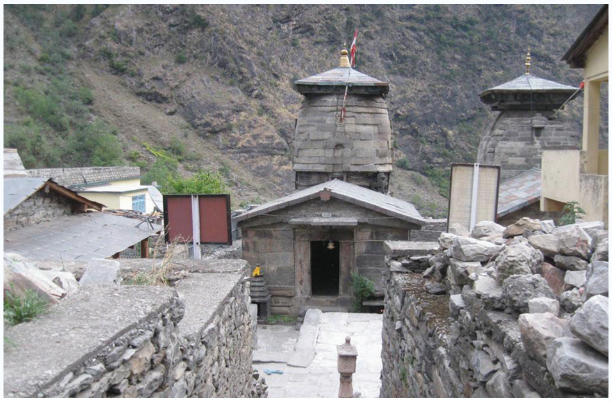

3. **भविष्य बदरी -** जोशी मठ से बस से 14 कि.मी. पर तपोवन और आगे 4 कि.मी. पैदल मार्ग पर भविष्य बदरी का मंदिर है। पुराण कथा के अनुसार अगस्त्य ऋषि ने यहाँ तपस्या की। कहा जाता है कि प्राकृतिक विपदा के फलस्वरूप बदरीनाथ जाना संभव नहीं होगा। भविष्य में इसी स्थान पर बदरी नारायण की पूजा होगी। यह तो समय ही बताएगा।

4. **वृद्ध बदरी -** बदरी नाथ के पथ पर पीपल कोटी से 17 कि.मी. बस से हेलग एवं वहाँ से

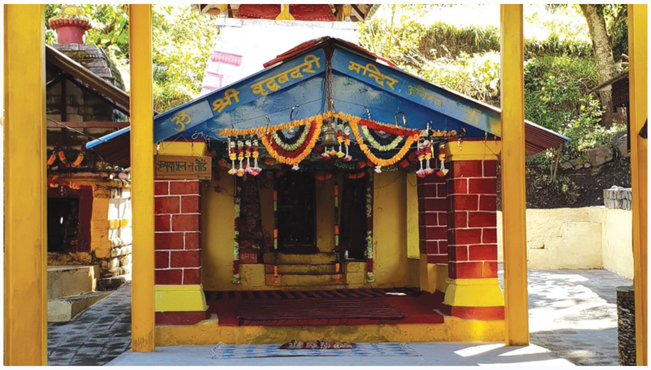

5 कि.मी. पैदल जाने पर अलकनन्दा के सुरम्य धारों में यह स्थान वृद्धदरी के नाम से प्रख्यात है। नारद मुनि ने भगवान की तपस्या की और नारद मुनि ने इस मंदिर के अधिकारक भगवान ने इनको दर्शन दिए।

5. आदि बदरी - कर्ण प्रयाग से रानी खेत के पथ पर 8 कि.मी. बस द्वारा और आगे 11 कि.मी. पैदल जाने पर आदि बदरी का मंदिर है। आदि बदरी नारायण दर्शन देते हैं। (पंच प्रयाग का विवरण आगे दिया जाता है) 108 की।

मंदिर के पीछे लक्ष्मी नरसिंहन का मंदिर है। इसमें श्रीमद् रामानुज एवं स्वामी देशिकन की मूर्तियाँ हैं। यहाँ मुख्य दर्शनीय स्थान - माता मूर्ति मंदिर, वसोधारा, लक्ष्मी वन, माणा गांव के पास व्यास कुण्ड, नन्दा देवी मंदिर, चरण पादुका, शेषनेत्र, शेष धार आदि। बदरीनाथ से 25 कि.मी. पर सत्य पद एवं सतोपन्थ नामक तीर्थ हैं। मई एवं सितंबर महीने यात्रा के लिए ज्यादा अनुकूल समय है।

मंगलाशासन - आल्वार 22 दिव्य पद बदरी नाथ संबन्धी 10 आल्वार पद एवं बदरीकाश्रम संबन्धी 10 आल्वार दिव्य पद (कुल 20 आल्वार दिव्य पद, देवनागरी लिपि में (हिन्दी भावार्थ सहित) अंकित शिला लेख मंदिर परिसर में स्थापित हैं - मंदिर सभाकक्षा में 10 आल्वार दिव्यपद।)

पंच प्रयाग (नदियों का संगम के पवित्र क्षेत्र है)।

1. देव प्रयाग - देवप्रयाग में अलकनन्दा, भागीरथी का संगम इसके बाद ही यह गंगा नदी के नाम से प्रवाहित होती है।

2. रुद्र प्रयाग - हरिद्वार से 163 कि.मी. तथा 2000 फुट की ऊँचाई पर बदरीनाथ के मार्ग में रुद्र प्रयाग है। (यहाँ से केदारनाथ का गमन पृथक होता है) यहाँ अलकनन्दा एवं मंदाकिनी का संगम स्थल हैं।

3. कर्ण प्रयाग - अलकनन्दा और पिण्डार नदी का संगम स्थल है - 2600 फीट की ऊँचाई। हरिद्वार से बदरी के मार्ग में 195 कि.मी.

4. **नन्द प्रयाग -** अलकनन्दा और मन्दाकिनी का मिलन स्थल (प्रयाग से 19 कि.मी. पर है। ऊँचाई 3106 पर)।

5. **विष्णु प्रयाग -** बदरीनाथ मार्ग में जैसे 40 कि.मी. अलकनन्दा और धौली गंगा का संगम स्थान।

एवं मंदिर स्वागत कक्षा में 10 दिव्य पद कुल 20 दिव्य पद। इसका प्रबन्ध श्रीरंगम श्रीमदाण्डवन के प्रकृत आण्डवन के आदेश एवं आल्वार ये दिव्य पद अलग अलग मार्ग 1300 वर्ष प्राचीन हैं।

'जय बदरी विशाल'

क्रमशः

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

भीष्म एकादशी का पवित्रता और मोक्षदा

- डॉ.पी.बालाजी

भारतीय हिंदू धर्म में प्रत्येक माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को जया एकादशी के नाम से या अजा एकादशी के नाम से अत्यंत भक्ति श्रद्धा से मनाते हैं।

इस एकादशी को ''भीष्म एकादशी'' भी कहते हैं। उत्तर भारत में इसे जया एकादशी के नाम से जाना जाता है, लेकिन दक्षिण भारत में लोग इसे आंध्र प्रदेश में भीष्म एकादशी के नाम से मनाते हैं। इसी त्यौहार को कर्नाटक में भीष्म एकादशी के नाम से मनाया जाता है, जहाँ इस दिन भगवान विष्णु के भक्तों की भारी भीड़ मंदिरों में उमड़ती है। लोग भगवान की पूजा करने के लिए इस शुभ दिन पर उपवास रखते हैं। इसी दिन भगवान शिव को समर्पित विशेष पूजा भी की जाती है। इसलिए, इस व्रत को बहुत महत्व दिया जाता है और इसे दोगुना लाभकारी माना जाता है।

भगवान श्रीकृष्ण ने पांडवों से भीष्म पितामह के बारे में इस प्रकार कहा कि ''मन्ध्यति भगवान भीष्मः तपोमे तद्गतम् मनः'' भीष्म पितामह की तरह सब गुण संपन्न पुरुष कोई नहीं। भीष्माचार्य इस धरती पर रहने वाले एक बहुत ही महत्वपूर्ण, प्रसिद्ध और महान योद्धा हैं। उन्हें धर्म का प्रतीक माना जाता है और महाकाव्य महाभारत में उल्लेख किया गया है कि देवता भी धर्म के मुद्दों पर भीष्माचार्य से सलाह लेते थे। वे धर्मशास्त्र, राजनीति विज्ञान, युद्ध की रणनीतियों आदि के बहुत बुद्धिमान और जानकार थे। भीष्म अपने पिता की खुशी के लिए आजीवन अविवाहित रहने की शपथ ली थी। जीवनबार ब्रह्मचर्य दीक्षा लेते है। इसके अलावा, भीष्माचार्य ने अपनी मृत्यु तक कुरु वंश का समर्थन और रक्षा करने की एक और कठिन शपथ भी ली थी। उन्होंने कई चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन अपने द्वारा किए गए दो वादों को कभी नहीं तोड़ा। धर्म के मार्ग पर चलने के अपने दृढ़ संकल्प के लिए भीष्माचार्य को धर्म, सत्य और अविश्वसनीय वीरता के मामले में अपनी आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए एक महान दिव्य पुरुष की तरह हम माना जाता है और आराध्य करते है। वह एक महान व्यक्ति हैं जो मानवता के विकास के तरीकों को स्पष्ट रूप से जानते हैं। ऐसा व्यक्ति कुरुक्षेत्र युद्ध होने के बाद अम्पाशय्या पर थे।

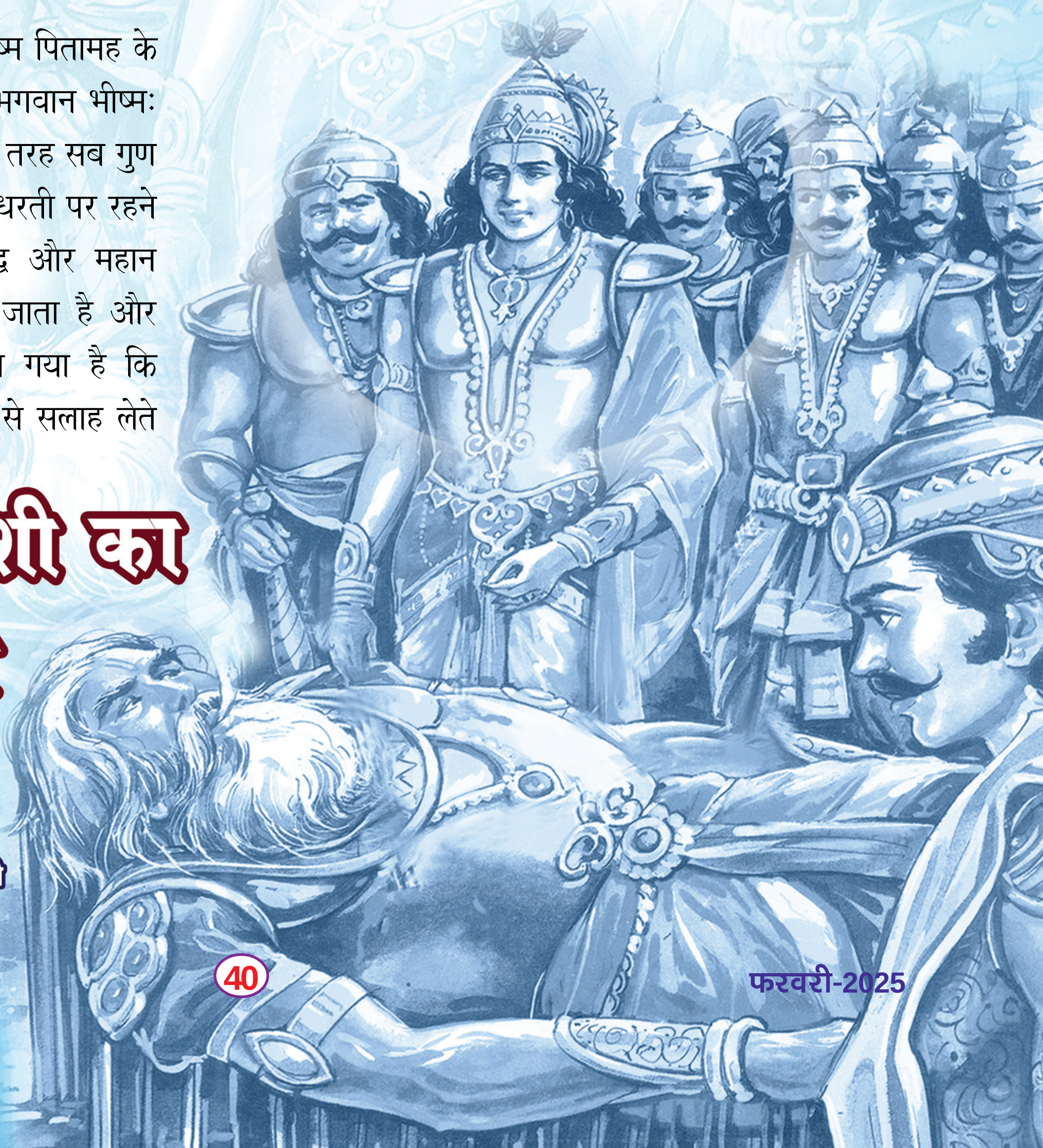

कौरव वंश के सबसे बड़े योद्धा भीष्म को अपने मृत्यु का दिन (चुनाव) तय करने का वरदान प्राप्त था। कुरुक्षेत्र युद्ध में अर्जुन के बाणों से क्षत विक्षत होने वाला भीष्म पितामह अम्पाशय्या पर रहते समय अपनी मृत्यु की तिथि को भी अपने चुनाया। वहीं दिन को हम भीष्म एकादशी कहते है। ऐसी महत्वपूर्ण एकादशी के दिन भीष्म ने भगवान महाविष्णु के एक हजार नाम युधिष्ठिर और अन्य पांडवों को बताए थे। उसी समय स्वयं भगवान श्री महाविष्णु वहाँ उपस्थित थे। इस दिन जो व्यक्ति भगवान की श्री विष्णुसहस्त्रनाम का जाप करते उन्हीं को मोक्ष की प्राप्त मिल जाएगी।

विशेषकर श्री विष्णुसहस्त्रनाम का जाप और ध्यान करने से भय दूर होता है और शुभता प्राप्त होती है। गणपति, भगवान व्यास, पितामह, पांडवों, माता-पिता और गुरुओं का भक्तिपूर्वक स्मरण करने, फिर इन दिव्य नामों का जप करने और शक्तिशाली, सर्वोच्च भगवान का ध्यान करने से हम कष्टों से मुक्त हो जाते हैं।

सबसे शक्तिशाली श्री विष्णुसहस्रनामस्तोत्र का जन्मदिन

भीष्म एकादशी सबसे शुभ दिनों में से एक है और इसे सबसे शक्तिशाली और प्रसिद्ध श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र की उत्पत्ति के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। इस दिन भीष्म पितामह जो कुरु वंश (लगभग 5000 साल पहले) के सबसे बुजुर्ग, सबसे बुद्धिमान, सबसे शक्तिशाली और सबसे धर्मी व्यक्ति थे, वे पांडवों के सबसे बड़े भाई युधिष्ठिर को श्री विष्णुसहस्रनाम के माध्यम से भगवान कृष्ण की महानता के बारे में बताया था।

भगवान के असंख्य गुणों की व्याख्या करता है। समय के साथ, कई विद्वानों ने श्री विष्णुसहस्रनाम पर भाष्य लिखे। पराशर भट्टर और आदिशंकराचार्य द्वारा लिखी गई टिप्पणी सभी भाष्यों में सबसे लोकप्रिय है। प्रतिदिन श्री विष्णुसहस्रनाम सुनने और सुनाने से धन, स्वास्थ्य और समृद्धि के मामले में बहुत लाभ होगा। वास्तव में, श्री विष्णुसहस्रनाम स्तोत्र कई मंत्रों के बराबर है जो शक्तिशाली मंत्र हैं। यही कारण है कि श्री विष्णुसहस्रनाम उस सभी की रक्षा करता है जो इसका पाठ करते हैं।

भीष्म एकादशी के दिन चंद्रमा के प्रत्येक चरण यानी पूर्णिमा और अमावास्या के बाद का 11वाँ दिन होता है। यह दिन भगवान विष्णु के लिए बहुत खास होता है और इस दिन श्रीवैकुंठ के द्वार उनके दर्शन के लिए खुले रहते हैं। एकादशी के दिन व्रत रखने से भगवान विष्णु को प्रसन्न करके मोक्ष की प्राप्ति होती है। एकादशी के दिन चावल, अनाज और पानी खाने से बचना चाहिए। इतना ही नहीं, इस दिन व्रत रखने वालों को भगवान विष्णु का नाम जपते हुए, उनकी कहानियाँ सुनते हुए और विष्णु पूजा करते हुए दिन बिताना चाहिए। एकादशी के दिन व्रत रखने और विष्णु पूजा करने से व्यक्ति श्रीवैकुंठम में स्थान प्राप्त करता है, जो भगवान विष्णु का निवास स्थान है। जया एकादशी का व्रत रखने वाले लोग अगले दिन सुबह तक भगवान से प्रार्थना करते रहते हैं। व्रत तोड़ने का काम सबसे पवित्र तरीके से किया जाता है, जो पवित्र स्नान करके और फिर भगवान के सामने दीप जलाकर किया जाता है। भक्तों का दृढ़ विश्वास है कि ये सभी घटनाएँ उन्हें राक्षसी प्रभावों से प्रभावी ढंग से लड़ने में मदद करती हैं। भगवान विष्णु के निवास तक पहुँचना भी सबसे पवित्र तरीके से होगा। भगवान विष्णु के अवतार भगवान कृष्ण की भी पूजा उनके पापों को दूर करने और मोक्ष प्राप्त करने के अनुष्ठान के हिस्से के रूप में की जाती है।

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मनाव प्रकृते स्वभावतः।
करोमि यद्यथ सकलं परस्मै नारायणयेति समर्पयामि।।

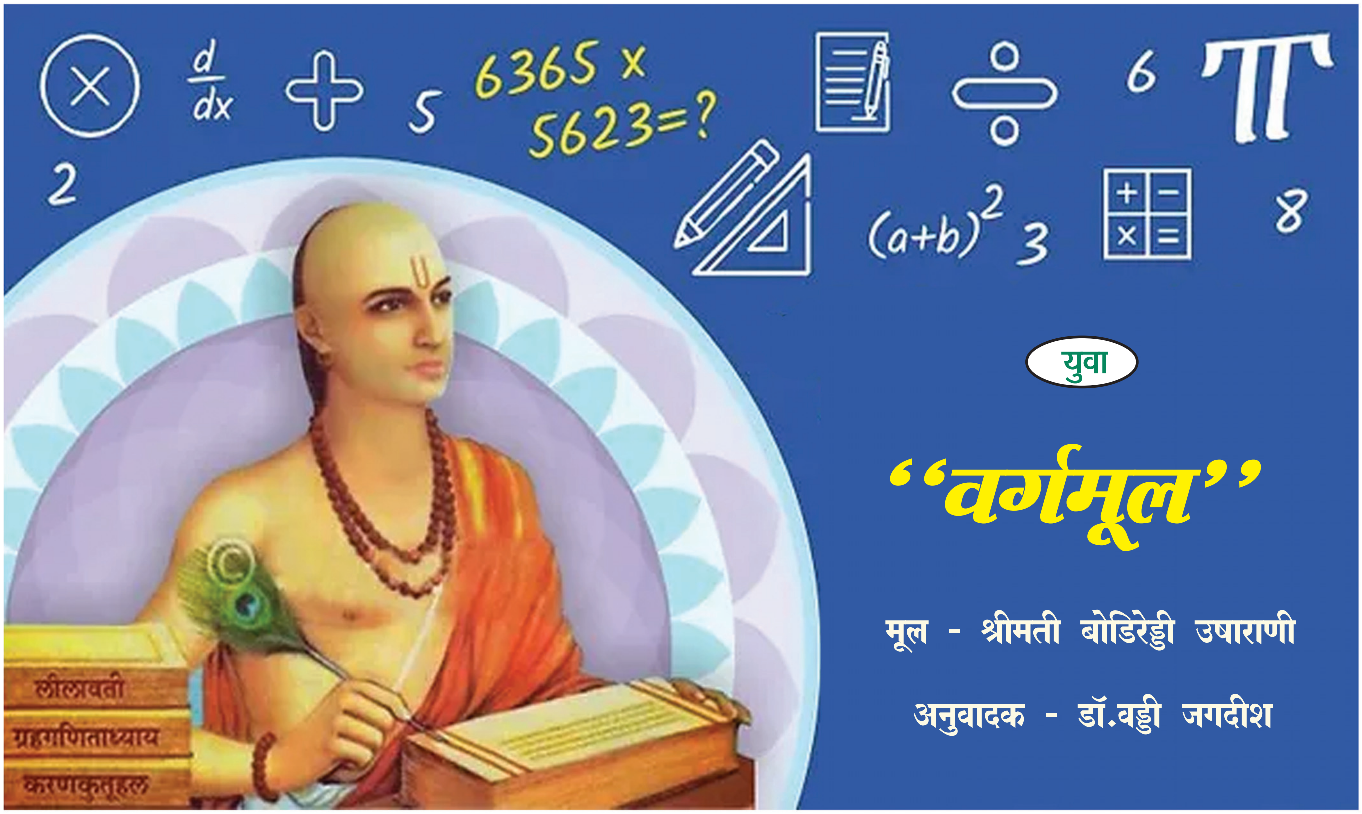

वेद गणित में वर्गमूल का हिस्सा अधिक है। इस वर्गमूल को भी हम मैखिक से कर सकते हैं। नीचे दी गई तालिका से संपूर्ण वर्गमूल को आसानी से पहचान कर सकते हैं। यहाँ भाग करने की जरूरत नही है। कुछ विधियाँ यहाँ अनुकरण सकते हैं।

विधि (1):

प्रथम स्थान की संख्या 5 होने पर वर्गमूल पहचानने की विधि :

पहले सैकड़ स्थान के अंक को दो क्रमशः राशियों के फल के रूप में लिखना चाहिए। इस में छोटे मूल्यों को वर्गमूल का दशम स्थान में लिखना चाहिए।

तब प्रथम स्थान की संख्या सदा के लिए 5 होता है।

उदा :

625 का वर्गमूल चाहिए तो :

- यहाँ सैकड़ स्थान का अंक 6 है, इसे 2x3 के रूप में लिखना। तब ‘2’ वर्गमूल का दशम स्थान बनता है। और प्रथम स्थान की संख्या ‘5’ है।
- अब 625 का वर्गमूल 25 बनता है। ऐसे ही 5 प्रथम स्थान जैसे अंकों का वर्गमूल पहचान कर सकते है।

वर्ग की संख्याएँ		वर्गमूल
25 →	0x0, 5x5 →	05
225 →	1x2, 5x5 →	15
625 →	2x3, 5x5 →	25
1225 →	3x4, 5x5 →	25
2025 →	4x5, 5x5 →	45

विधि (2):

कारणांक पद्धति द्वारा वर्गमूल पहचानना :

वर्गराशि	समान राशियों का लाभ	वर्गमूल
121	11x11	11
144	12x12	12
169	13x13	13
196	14x14	14
225	15x15	15

विधि (3):

मौखिक वर्गमूल विध :

इस विधि में 1 से 9 तक अंकों का वर्ग अगर पहले ही पता चले तो 4 अंकों का संपूर्ण वर्गमूलों का फल को आसान से पहचान सकते है।

संख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9
वर्ग	1	4	9	16	25	36	49	64	81

* ऊपर दी गई तालिका में किसी भी वर्ग संख्या प्रथम स्थान 1 होने पर उस का वर्गमूल 1 या 9 होता है।
* अगर प्रथम स्थान की संख्या 4 होने पर उस का वर्गमूल 2 या 8 होता है।

- अगर प्रथम स्थान की संख्या 6 होने पर उस का वर्गमूल 4 या 6 बनता है।
- अगर प्रथम स्थान की संख्या 9 होने पर उस का वर्गमूल 3 या 7 होता है।
- अगर प्रथम स्थान की संख्या 5 होने पर उस का वर्गमूल 5 होता है। इस प्रकार हमेशा के लिए याद रखने से वर्गमूल को मौखिक से पहचान कर सकते है।

विधि : जिस संख्या दशम स्थान की संख्या से आगे रहती है उस संख्या वर्ग के बाद दी संख्या को दशम स्थान की संख्या के रूप में लिखना अनिवार्य है। और दिये गये वर्ग में संख्याओं की स्थानों को अनुशीलन कीजिए। और जो संख्या किन-किन संख्याओं से वर्ग किया जाता है उसे मन में रखना चाहिए। बाद में वर्गमूल का दशम स्थान के अंक को अगले अंको से गुणना करने पर आने वाले फल का वर्गमूल का दशम स्थान के आगे संख्या से ज्यादा या कम हो उसे पहचानना...

अगर ज्यादा होने पर मन की संख्या कम वाली संख्या का स्थान वर्गमूल का प्रथम स्थान बनता है। अगर कम होने पर मन की संख्या बडी संख्या का वर्गमूल में प्रथम स्थान रूप में लेना चाहिए।

उदा : 5776 का वर्गमूल चाहिए तो...

- यहाँ दशम स्थान की पहली संख्या 57. इसे अनुशीलन करने से 7 का वर्ग का अगला स्थान पर होता है। इसलिए यहाँ 7 को दशम स्थान की संख्या के रूप में लेना चाहिए।
- वर्ग में प्रथम स्थान की संख्या 6 है। यह मूलतः 4, 6 अंकों को वर्ग करने पर प्रथम स्थान पता चलता है। इन संख्याओं को मन रखना चाहिए। वर्ग में 7 संख्या है। इस के बाद की संख्या 8 है। दोनों को गुणना करने पर 7x8= 56 बनता है। यह संख्या 57 से कम है। इसलिए मन की संख्या 6 वर्गमूल में प्रथम स्थान होता है।

  इसलिए 5776 का वर्गमूल 76 होता है।

उदा (2) : 2501 का वर्गमूल चाहिए तो...

24 संख्या 4 का वर्ग संबंधित है। इसलिए यहाँ वर्ग का वर्गमूल में दशम स्थान की संख्या 4 है। और वर्ग में प्रथम स्थान की संख्या 1 है। इसलिए 1, 9 को वर्ग करने में वर्गमूल मिलता है। इस फल को मन में रखना चाहिए। आया हुआ फल में दशम स्थान की संख्या 4 है, इस के अगले अंक 5 से गुणना करने पर 20 होता है। इस संख्या 24 से कम है। इसलिए मन की संख्याओं को जो बड़ी संख्या 9 है। यहाँ 9 वर्ग का प्रथम स्थान होता है।

अब 2401 का वर्गमूल 49 लीजिए... ऐसे ही वर्गमूल को पहचान कर सकते है।

(आयुर्वेद)

अमरूद

- डॉ.सुमा जोषि

यह अमेरिका के उष्णकटिबन्धीय क्षेत्रों का मूल निवासी है। इसकी प्राचीन संस्कृतियों और परम्पराओं में निहित एक समृद्ध पौराणिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है।

पौराणिक पृष्ठभूमि

हिन्दू मान्यताएँ : भारत में, अमरूद के पेडों को कभी-कभी पवित्रता से जोडा जाता है और मंदिरों के पास लगाया जाता है। उनकी कथित पवित्रता के कारण उनका उपयोग कुछ धार्मिक अनुष्ठानों में किया जाता है।

मेसो अमेरिकन मान्यताएँ : माया पौराणिक कथाओं में, अमरूद को उदावर्त और समृद्धि से जुडा एक पवित्र फल माना जाता था। इसका उपयोग अक्सर कृषि और जीविका के देवताओं का सम्मान करने के अनुष्ठानों में किया जाता था।

फिलीपीन लोकगीत : फिलीपीन किंवदंतियों में, अमरूद का पेड एक विनम्र और उदार किसान की कहानी से जुडा हुआ है, जिसके गुणों को तब पुरस्कृत किया गया जब उसकी भूमि पर स्वादिष्ट फल देनेवाला एक अमरूद का पेड उग आया, जो प्रचुरता और दैवीय कृपा का प्रतीक था।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

औषधीय महत्व : पारंपरिक चिकित्सा में, अमरूद की पत्तियों और फलों का उपयोग प्राचीन सभ्यताओं द्वारा दस्त, घाव और संक्रमण जैसी बिमारियों के इलाज के लिए किया जाता था। यह प्रथा आज भी कई संस्कृतियों में जारी है।

पूर्व - कोलंबियाई युग : अमरूद के पौधे की पोषण और औषधीय गुणों के कारण मध्य और दक्षिण अमेरिका में स्वदेशी लोगों द्वारा बडे पैमाने पर खेती की जाती थी। पुरातात्विक साक्ष्य से पता चलता है की इसका उपयोग हजारों साल पहले हुआ था।

औपनिवेशिक विस्तार : 16वीं शताब्दी के दौरान स्पेनिश और पुर्तगाली खोजकर्ताओं ने अमरूद को एशिया, आफ्रीका और प्रशान्त द्वीपों में पहुँचाया। अपनी अनुकूलन क्षमता और स्वास्थ्य लाभों के कारण इसने तेजी से लोकप्रियता हासिल की।

अमरूद का वैज्ञानिक नाम है Psidium Guajava और यह कुटुम्ब Myrtaceae का है। Thejunus Psidium में उष्णकटिबन्धीय फलदार पौधों की कई प्रजातियाँ शामिल हैं, लेकिन Psidium Guajava सबसे प्रसिद्ध और व्यापक रूप से खेती की जानेवाली प्रजाती है।

अमरूद के पौधे का रूपात्मक विवरण : यह एक छोटा, सदाबहार या अर्ध-पर्णपाती पेड या झाडी है। आमतौरपर फैली हुई छतरी के साथ 3-10 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ता है। पौधे की जडे ''उथली जड प्रणाली'' होती है, जो उष्णकटिबन्धीय और उपोष्णकटिबन्धीय मिट्टी के लिए अच्छी तरह से अनुकूलित होती है। इसका

तना ''बुडी'' होता है, चिकनी, पतली, छिलनेवाली छाल के साथ जो हल्के भूरे या भूरे रंग की होती है। पत्ते सरल, विपरीत और अण्डाकार से आयताकार के होते हैं।

लगभग 5-15 cm लम्बी, चमडे जैसी, प्रमुख शिराओं वाली होती हैं। फूल सफेद, सुगन्धित और एकान्त या छोटे समूहों में होते हैं। प्रत्येक फूल में पांच पंखुडियाँ और पुंकेसर का एक प्रमुख गुच्छा होता है। फल एक 'बेरी', 'गोल' या 'नाशपती' के आकार का, व्यास में 4-12 cm होता है।

त्वचा कच्ची होने पर 'हरि' होती है और पकने पर 'पीली' या 'हल्की गुलाबी' हो जाती है। गूदा सफेद, गुलाबी या लाल हो सकता है जिसमें कई छोटे, कठोर बीज लगे होते हैं।

फल के गूदे में असंख्य, छोटे, कठोर बीज मौजूद होते हैं। कुल मिलाकर, अमरूद का पौधा अपनी मजबूत संरचना, प्रचुर फल उत्पादन और विभिन्न मिट्टी की स्थितियों के अनुकूल होने के कारण उष्णकटिबन्धीय जलवायु के लिए उपयुक्त है।

आयुर्वेदीय गुणधर्म :

1) रस (स्वाद) : मधुर (मीठा), कषाय (कसैला)।

2) गुण : लघु (हल्का), रूस (सूखा)।

3) वीर्य (शक्ति) : शीत (शीतलता)।

4) विपाक (पाचनोत्तर प्रभाव) : मधुर (मीठा)।

5) दोषकर्म : यह अपने शीतलता और कसैले गुणों के कारण कफ और पित्त दोषों को सन्तुलित करने में मदद करता है।

6) अमरूद फल : समग्र स्वास्थ्य के लिए कच्चा, पका या जूस के रूप में लिया जाता है।

7) अमरूद की पत्तिया : औषधीय प्रयोजनों के लिए कोढ़े, पेस्ट या पाउडर के रूप में उपयोग किया जाता है।

8) अमरूद की छाल : कभी-कभी हर्बल फॉर्मुलेशन में इसके कसैले गुणों के लिए उपयोग किया जाता है।

आयुर्वेद में, आमरूद को एक प्राकृतिक उपचार माना जाता है जो समग्र स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है, दोषों को संतुलित करता है और पाचन, श्वसन और त्वचा के स्वास्थ्य का समर्थन करता है।

क्रमशः

दिसंबर-2024 महीने का क्विज-29 के समाधान

1) हनुमान, 2) केसरी नंदन,

3) मतंग ऋषि, 4) दक्ष प्रजापति,

5) दाक्षायणी, 6) शिव जी,

7) चक्रायुध, 8) श्रीकृष्ण,

9) शिव-पार्वती, 10) छे (6),

11) मोर, 12) मुर्गा,

13) कर्ण, 14) चंदन की लकडी,

15) गोदा-आंडाल.

फरवरी महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मेष राशि - शारीरिक सुख, स्वास्थ्य उत्तम। अन्न-धन-वस्त्रादि लाभ, नौकरी-व्यवसाय में सफलता, सामाजिक कार्यों से लाभ। पारिवारिक सुख एवं समृद्धि, आर्थिक उन्नति, शैक्षणिक सफलता। अभीष्टकार्य सिद्धि, यत्र-तत्र यात्रा योग। शत्रु विजय, आकस्मिक धनलाभ, स्त्री सुख, अपनों का सहयोग, इष्टमित्रों का साथ।

वृषभ राशि - इष्टमित्र-कुटुम्बियों का सहयोग-समर्थन, आर्थिक उन्नति, छात्रों के लिए प्रतियोगि परिक्षाओं में सफलता। पारिवारिक सुख, आकस्मिक धनलाभ, गृहस्थ जीवन सुखमय। उद्योग-धन्धों में सफलता। व्यापार क्षेत्रों में वृद्धि होने से धनलाभ, पर्यटन योग, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में संलग्नता।

मिथुन राशि - शारीरिक कष्ट-बाधा जिससे मानसिक व्यथा एवं परेशानी रहेगी। अपने धैर्य को बनाकर चले प्रयत्न करने से सफलता मिलेगी, मन शान्त रखे, अनावश्यक तनाव होने के कारण वाद-विवाद हो सकता है। उद्योगादि कार्य क्षेत्रों में सफलता, राजकीय कार्यों में कमी होगी। इस सबके बाद भी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

कर्कटक राशि - अपने दिनचर्या को व्यवस्थित बना कर रखे, नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी। छात्रों को कठिन परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होंगे। आर्थिक समुन्नता, आय से अधिक खर्च, व्यवसायादि क्षेत्रों में श्रम पूर्ण सफलता। संतान पक्ष की ओर से चिन्ता बनी रहेगी, पारिवारिक सुख में कमी।

सिंह राशि - नित्य-नैमित्तिक कार्यों में विघ्न बाधाएँ। अव्यवस्थित दिनचर्या होने के कारण शारीरिक अस्वस्थता, उद्योग-व्यापारिक क्षेत्रों का विस्तार होगा जिससे आर्थिक पक्ष मजबूत होगा और मन प्रसन्न रहेगा। पारिवारिक कलह, दाम्पत्य जीवन कुछ कटुमय रहेगा। शत्रु-विरोधि पक्ष परेशान कर सकता है।

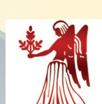

कन्या राशि - उल्लास से पूर्ण यह मास आपके लिए रहेगा। शारीरिक सुख, शक्ति संवर्धन, पारिवारिक सुख, दाम्पत्य सुख, संतान सुख, आकस्मिक धनलाभ। सन्तान का भाग्योदय, सन्तान पक्ष से अनेकानेक लाभ, औद्योगिक सफलता, दिनचर्या सुदृढ़ होंगे। नौकरी में पदोन्नति, पद प्रतिष्ठा-सम्मान प्राप्ति।

तुला राशि - व्यवस्थित दिनचर्या होने से कार्य सुख प्राप्त होंगे। पुराने रुके हुए कार्यों का निवारण होगा और कार्य में प्रगति होगी। नौकरी-व्यवसाय की स्थिति सामान्य रहेगी, शत्रु विजय विरोधि पक्ष परास्त होंगे। वाहन सुख, विद्याप्राप्ति, ज्ञान वृद्धि, छात्रों के लिए सुखद समय। पर्यटन करने से शारीरिक कष्ट।

वृश्चिक राशि - यत्र-तत्र यात्रा करने के कारण शारीरिक एवं मानसिक तनाव-कष्ट। स्वास्थ्य सामान्य, नूतन गृह-उद्योगादि निर्माण कार्यों में प्रगति। गृहस्थ जीवन सुखमय रहेगा। रोजी-रोजगार में अनेकानेक सफलता, अपनों का सहयोग, पारिवारिक सहयोग के कारण सुख-शांति, नौकरी उल्लास, साधु-संतों का समागम।

धनुष राशि - कार्य सुख, आर्थिक विकास, पदोन्नति। गृहस्थ जीवन मधुरमय बना रहेगा, धार्मिक-सामाजिक-राजनीतिक कार्य का विस्तार होगा। व्यापारिक प्रगति, प्रशासनिक कार्यों में प्रवृत्ति। शक्ति संवर्धन, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि। रोजी-रोजगार, व्यवसाय क्षेत्रों में सफलता।

मकर राशि - आर्थिक पक्ष मजबूत रहेगा। यत्र तत्र यात्रा करने से कष्ट, मानसिक तनाव, वाद-विवाद से मन खिन्न रहेगा। स्वास्थ्य सामान्य, कृषि-भूमि कार्यों में सफलता। उद्योग-व्यापार में अनेक लाभ प्राप्त होंगे। पारिवारिक दायित्व का निर्वहन, सामाजिक संलग्नता, राजकीय सहयोग।

कुंभ राशि - यह माह आपके लिए मिलाजुला रहेगा ग्रहस्थिति परिवर्तन होने के कारण शारीरिक कष्ट, मानसिक व्यथा। वाहन से कष्ट एवं चोट-दुर्घटना हो सकती है, अपनों का सहयोग, कौटुम्बिक सुख-सौहार्द पूर्ण वातावरण रहेगा। छात्रों के लिए सुखद समय, उद्योग-व्यापार में अनुकूलता, दाम्पत्यजीवन सुखमय रहेगा।

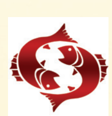

मीन राशि - यह मास आपके लिए शुभफलदायक रहेगा, आरोग्य सुख, रोग-कष्टों से आराम एवं मुक्ति। आपके बुद्धि विवेक परिश्रम से शत्रु पक्ष निर्बल होंगे। सामयिक कार्यों में सफलता, अनेकानेक सफलता प्राप्त होंगे। नौकरी-व्यापार में अनुकूलता, धार्मिक-सामाजिक कार्यों में संलग्नता, आय से अधिक खर्च।

(नीतिकथा)

मंत्री की गलती

- श्री के.रामनाथन

राजा रत्नसेन बड़ा कुशल एवं ईमानदार था। वह अपने देश का शासन उत्तम ढंग से कर रहा था। उसके राज्य में प्रजा सुखी थीं। एक बार राजा रत्नसेन अपने कुछ सैनिकों के साथ शिकार करने वन पहुँचा। बहुत समय के बाद भी उसे कोई जानवर दिखायी नहीं दिया। वह एकदम थककर एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। तब उसने देखा कि उसके सामने झुरमुट में कोई चीज चमक रही है। वह खुद जाकर देखा और पाया कि वह एक देवी की मूर्ति है और वह मूर्ति अतिसुन्दर है। राजा उस मूर्ति को अपनी राजधानी में ले आया और एक मन्दिर का निर्माण करके उस मूर्ति की प्रतिष्ठा की। यह सुनकर दूर दूर से लोग वहाँ आकर देवी के दर्शन करने लगे। भक्तों की भीड़ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। भक्त लोग सिर्फ उसके देश में से ही नहीं आस-पास के देश से भी आने लगे। यह देखकर राजा के मन में एक विचार उदित हुआ। उसने सोचा कि हम तो जनता को सुशासन दे रहे हैं और हमारा नाम सदा स्थाई रखने योग्य कोई काम करना चाहिए।

इसके लिए उसने अपने अनुभवी मंत्रियों को बुलाकर सलाह माँगी। वे लोग यही कहने लगे कि मन्दिर के निर्माण के बाद हमारे देश में आने वाले भक्तों की संख्या बढ़ती जा रही है। उन्हें ठहरने के लिए उचित व्यवस्था करें तो उत्तम है। यह सुनकर राजा ने ऐसा उपाय बनाया कि मन्दिर में देवी के दर्शन करने आने वाले भक्तों के लिए एक विशाल धर्मशाला स्थापित करनी चाहिए और वह धर्मशाला अनोखे रूप में निर्मित हो। उसके निर्माण के बाद उस धर्मशाला के निकट अपना नाम एक बड़े चट्टान पर खुदवाकर रखें तो राजा का नाम सदा बना रहेगा।

राजा ने ऐसे अनोखे धर्मशाला को निर्मित करने के लिए भवन निर्माण में प्रसिद्ध एवं अनुभवी कारीगरों को बुलाकर उपाय पूछा और उनके विचारों के अनुसार धर्मशाला का प्रारुप बनाया गया। बनाये गये उस प्रारुप के अनुसार धर्मशाला का निर्माण प्रारंभ हुआ। राजा अपने खजाना से अत्यधिक धन खर्च करने लगा। निर्माण के लिए देश के अनेक धनी लोग दान देने के लिए आगे आये। परंतु राजा का विचार था कि यह धर्मशाला केवल अपने धन से निर्मित हो तभी उसका नाम सदा बना रहेगा। इसलिए उसने उन दानियों से धन लेने से इनकार कर दिया। राजा रोज धर्मशाला निर्माण कार्य को स्वयं देखता और आवश्यक सुधार के लिए आज्ञा देता था। इस कार्य में विपुल धन के खर्च के बारे में उसे कोई चिंता नहीं थी। उसका विचार तो यही रहा कि उसके तदनंतर भी अपना नाम सदा अमर बना रहे।

तीन साल के कठोर परिश्रम के बाद आखिर धर्मशाला का निर्माण पूरा हुआ। अब धर्मशाला के निर्माण में लगे कारीगर के मन में एक विचार उदित हुआ। याने बड़े सुन्दर ढंग से इस धर्मशाला का निर्माण हो गया। अब राजा ने अपने नाम को सदा याद रखने केलिए एक योजना बनाया वह एक विशेष चट्टान पर अपना नाम खुदवाकर उस धर्मशाला के निकट रखने का सोचा इससे वहाँ ठहरने आये लोग राजा का नाम सदा याद करेंगे। उसके लिए योग्य चट्टान की खोज हुई। वह चट्टान पड़ोस देश में मिला। उसे ले आना उतना आसान नहीं था। इसलिए कारीगर ने राजा से कहकर उस चट्टान को लाने के लिए एक विशेष प्रकार की गाड़ी बनवायी। वह कारीगर, मंत्री और पाँच सौ घोड़े सहित पाँच सौ हृष्ट-पुष्ट वीरों को गाडी के साथ अन्य देश में भेजा।

बड़े प्रयास के बाद वह विशेष शिला गाड़ी पर लायी गयी और पाँच सौ घोड़े उसे खींच ले आने लगे। लंबी यात्रा थी और रास्ते में उन सब को एक विशाल जंगल पार करना था। जब वे सब जंगल में आये तब वे सब बहुत थक गये थे और उनहें बड़ी प्यास लगी। कुछ वीर पानी की खोज में आस-पास गये। लेकिन वहाँ निकट कोई जलाशय नहीं दिखाई दिया। तब तक यहाँ पानी के न पीने

के कारण अनेक वीर बेहोश होने लगे। उस समय वहाँ लचीला नामक एक बूढ़ी औरत उस ओर आयी और उसने देखा कि अनेक वीर बेहोश हो रहे हैं। उसने तुरंत अपनी झोंपड़ी से पानी लाकर उनको पिलवाया और उन सबको रोटी भी बनाकर दी। इससे वे वीर उत्साहित हो गये। लचीला ने उनसे पूछा कि तुम लोग कौन हो और यहाँ क्यों आये हो तब मंत्री ने जवाब दिया कि हमारे राजा रत्नसेन एक विशाल धर्मशाला की स्थापना कर रहे हैं। इसलिए राजा का नाम सदा स्थायी रहने केलिए एक चट्टान ले जा रहे हैं जिस पर राजा का नाम खुदवाया जाएगा।

यह सुनकर बूढ़ी लचीला ने उस मंत्री से विनती की कि जब आप लोगों का कार्य पूरा होगा और धर्मशाला का लोकार्पण होगा तब मुझे बुलाना, मैं उसे देखना चाहती हूँ। मंत्री ने भी बड़ी आनंद से वादा किया और कहा कि आपके कारण ही हमें अब बल प्राप्त हुआ है। इसलिए हम उसे नहीं भूलेंगे और आपको जरूर ले जायेंगे। उसके बाद वे सब बूढ़ी से बिदा लेकर वहाँ से निकल पड़े। भवन निर्माण कारीगर ने उस भारी शिला पर राजा का नाम बड़े सुन्दर ढंग से खुदवाया और उसे धर्मशाला के समीप स्थापित किया। अब जो यात्री उस धर्मशाला में ठहरने आते हैं वे राजा का नाम पढ़े बिना नहीं जायेंगे।

एक शुभ दिन पर धर्मशाला को लोकार्पण करने का निश्चय किया गया। उस दिन राजा रत्नसेन ने अपनी माँ को बुलाकर धर्मशाला को लोकार्पण करने की प्रार्थना की। माँ ने भी ऐसे ही किया। तब राजा ने लोगों के सामने भाषण दिया कि यह धर्मशाला जो यात्री मंदिर में देवी के दर्शन के लिए आते हैं वे यहाँ निश्चित ठहरकर आराम ले सकते है। यह धर्मशाला मैंने अपने धन से निर्मित किया है और मैंने इसे बनाने में किसी से भी दान नहीं लिया। इसलिए यहाँ की शिला पर नाम अंकित कर दिया है और अब रेशमी कपड़े से आवृत उस शिला को मैं अनावरण करता हूँ। ऐसा कहकर उसने रेशमी कपड़े को हटाया तो वहाँ लिखित नाम को देखकर राजा सहित सारे जन आश्चर्य में हो गये। क्योंकि उस शिला पर राजा रत्नसेन का नाम तो नहीं था, बल्कि उसके बदले लचीला नाम अंकित था।

अब राजा बड़े असमंजस में पड़ गया। क्योंकि जब उसका नाम खुदवाया गया तब वह वहाँ उपस्थित था। अब वहाँ दूसरे किसी का नाम देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह अपने देश के महान साधु से मिलकर सारी बातें बतायी और कारण पूछा। तब साधु ने कहा, राजन्, तुमने जनता के सामने भाषण में यही कहा कि मैं अपने धन से इस धर्मशाला का निर्माण किया है और किसी से भी कोई सहायता नहीं ली गयी है। जिन लोगों ने काम किया उन सबको उचित धन दिया गया। वास्तव में यह सच नहीं है। तुम अपने वीरों द्वारा ढूँढ़ निकालो कि लचीला नाम का कोई है। उसके बाद तुम सच क्या है जाना लोगे।

साधु की बात सुनकर राजा देश भर में ढिंढ़ोरा पिटाकर सूचित करवाया कि लचीला नाम का व्यक्ति राजा से मिलें। यह खबर पड़ोस देश में भी फैल गयी। यह सुनकर एक दिन जंगल में रहनेवाली वह बूढ़ी और लचीला राजा से मिलने महल में आयी और उसने राजा को अपना परिचय दिया। तब तक दरबार में बैठा मंत्री उठ कर राजा के चरण पर गिरकर नमस्कार करते हुए कहा, "राजन् मुझसे बड़ी गलती हो गयी। मैंने ही इस बूढ़ी औरत को वादा दे रखा था कि धर्मशाला के लोकार्पण के समय ले आऊँगा। इसने हमारे सैनिकों को जल देकर प्यास बुझाया और रोटी देकर भूख दूर की। उसके वास्ते ही हम जब शिला के साथ जीवित यहाँ आ पहुँच सके।"

यह सुनकर राजा रत्नसेन ने अपनी मंत्री से हुई गलती के लिए बुढ़िया से माफी माँगी और उसकी सहायता के लिए योग्य पुरस्कार देकर उसका उचित सम्मान किया। उसके बाद वह खुद उस बूढ़ी को धर्मशाला से बाहर आये तब देखा कि उस शिला पर लचीला के नाम के बदले राजा रत्नसेन का नाम पाया। यह देखकर राजा सहित सब चकित हो गये। "सच है, किसी से समय पर की गयी सहायता छोटी भी क्यों न हो उसे कभी भूलना नहीं चाहिए। हमें अपने जीवन में कृतज्ञता का पालन करना चाहिए। क्योंकि संसार का कोई भी काम एक अकेले से होना असंभव है।"

(चित्रकथा)

भक्ति से कुछ भी संभव है।

तेलुगु मूल - डॉ.के.रविचंद्रन

अनुवादक - डॉ.एम.रजनी

चित्रकार - श्री तुंबलि शिवाजी

भगवान से प्राप्त आम के फल को देख कर पुनीतवती के पति सोच में पड गये।
दैवांशसंभूत स्त्री से मैं कैसे भौतिक संबंध जोड़ूँ। इसीलिए व्यापार करने के लिए पांड्यनाडु प्रांत को चले जाऊँगा।
दामाद दूसरे गाँव में बसा जान कर पुनीतवती के पिता अपनी बेटी को मोतियों की पालकी में बिठाकर पांड्यनाडु को आया।
पुनीतवती के पति ने वहाँ दूसरी लडकी से शादी की। लडकी पैदा होने के बाद अपनी लडकी का नाम उसने पुनीतवती रखा।
हे परमेश्वर! जिस पति के लिए मैं आज तक अपनी सैंदर्य की रक्षा करते आयी थी, वही पति आज मुझे ठुकराने लगा तो, यह सौंदर्य किस लिए? मुझे योगिनी जैसा बदलाकर उस रूप को मुझे दीजिए।
पुनीतवती बूडी बनकर शिवयोगिनी की तरह बदल गयी।
शिवा! सशरीर से कैलाश आ रही हूँ। हे स्वामी मुझे दर्शन दीजिए।
प्रभु! देखो, हमारी पूजा करनेवाली माँ आयी।
माँ बोलो! तुम्हे क्या चाहिए?
आप का नाम स्मरण और तुम्हारा सान्निध्य की प्राप्ति करो।
2
लौट कर आयी कारैक्काल माँ, अंगक्काडु में हर दिन शाम को शिव का नृत्य को प्रत्यक्ष देखते हुए, उनकी कीर्तन करते हुए धन्य बन गयी। सशरीर से कैलाश जाकर शिव से स्वयं अम्मा कहलाकर, लौटकर आनेवाली इस महान भक्त की कथा शिवरात्रि के पर्व दिन में याद करने वालों की सारी इच्छाएँ पूर्ण होगी।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे. प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम...
लिंग/आयु............, चंदा नंबर........................
पता..
....
मोबाइल नं...

क्विज-31

1) वसंत पंचमी का और एक नाम क्या है?
ज)..
2) वसंत पंचमी के दिन किस देवी माँ का आराधन करते है?
ज)..
3) भगवान शिव को लिंग रूप में आराधन का शाप दिया ऋषि का नाम क्या है?
ज)..
4) श्रीवैकुंठ को छोडकर लक्ष्मी देवी किस प्रांत को चली गयी?
ज)..
5) राजा रत्नसेन के मंत्री और सैनिकों ने किस व्यक्ति का सहायता स्वीकार किया?
ज)..
6) कर्दम ऋषि का पत्नी का नाम क्या है?
ज)..
7) अरुंधती के पती का नाम क्या है?
ज)..
8) पांच बदरी क्षेत्र का नाम क्या है?
ज)..
9) हिमवंत की पुत्री कौन है?
ज)..
10) शिव जागरण का विशिष्ट स्थान पाई पर्व क्या है?
ज)..
11) मेनका के पति का नाम क्या है?
ज)..
12) मेनका और हिमवंत का दामाद कौन है?
ज)..
13) कारैक्काल में शिव भक्तिन का नाम क्या है?
ज)..
14) साधु महात्मा को खाने के लिए पुनीतवती ने किस फल को दिया?
ज)..
15) माघ मास शुक्ल पक्ष एकादशी को क्या कहते है?
ज)..

बालविकास

बिंदी को जोड़िए

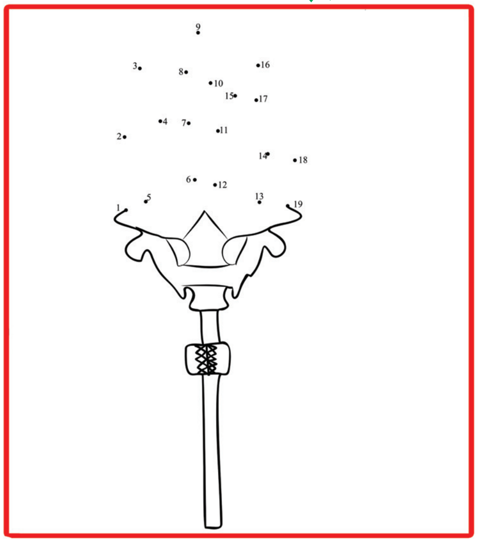

रंगों को भरिये क्या!

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) काशी	अ) श्री महाविष्णु
2) बदरीनाथ	आ) श्री ज्ञान सरस्वती देवी
3) कांचीपुरम्	इ) भगवान शिव
4) बासर सरस्वती	ई) श्री महालक्ष्मी
5) कोल्हापुर	उ) श्री कामाक्षी देवी

1) इ 2) अ 3) उ 4) आ 5) ई

श्री सरस्वती स्तुति

ॐ सरस्वत्यै च विद्महे
ब्रह्मपुत्र्यै च धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।।

चित्रों को जोडिएँ

(a)

(b)

(c)

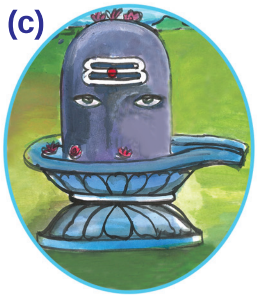

(d)

(e)

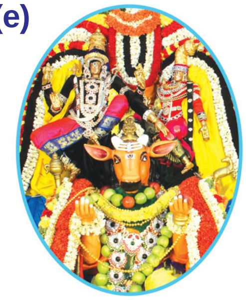

जवाब : a) 5, b) 4, c) 1, d) 3, e) 2.

(1)

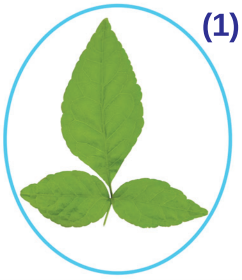

(2)

(3)

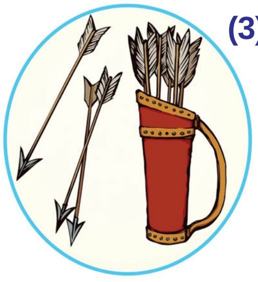

(4)

(5)

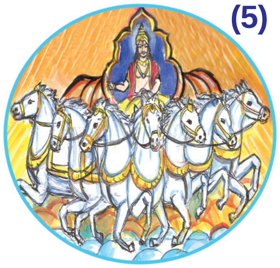

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
   (अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
   ....
   पिनकोड ....
   मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड ☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
   विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
   (अ) चंदा की संख्या :
   (आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
   मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) / भारतीय डाकघर (IPO) /
   ई.एम.ओ. (EMO) :
   दिनांक :

स्थान :

दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

....

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
दूसरा मंजिल, ति.ति.दे.प्रेस, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने केलिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877

दूरभाष : 2264359, 2264543.

संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र - ॐ नमो वेंकटेशाय

https://ttdevasthanams.ap.gov.in
इस वेबसैट से भी सप्तगिरि पत्रिका चंदा भर सकते है।

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., P.G. Dip. in Ephigraphy, Dip. in Yoga on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

श्रीनिवासमंगापुरम् श्री कल्याण वेंकटेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2025 फरवरी 17 से 26 तक

17-02-2025 सोमवार
रात - सेनाधिपति उत्सव, अंकुरार्पण

18-02-2025 मंगलवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - महाशेषवाहन

19-02-2025 बुधवार
दिन - लघुशेषवाहन
रात - हंसवाहन

20-02-2025 गुरुवार
दिन - सिंहवाहन
रात - मोतीवितानवाहन

21-02-2025 शुक्रवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - सर्वभूपालवाहन

22-02-2025 शनिवार
दिन - पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव
रात - गरुडवाहन

23-02-2025 रविवार
दिन - हनुमन्तवाहन
सायं - वसंतोत्सव
रात - गजवाहन

24-02-2025 सोमवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

25-02-2025 मंगलवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - अश्ववाहन

26-02-2025 बुधवार
दिन - पालकी उत्सव, तिरुच्चि उत्सव, चक्रस्नान
रात - तिरुच्चि उत्सव, ध्वजावरोहण

तिरुपति
श्री कपिलेश्वरस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

2025 फरवरी 18 से 28 तक

18-02-2025 मंगलवार
रात - मूषिकवाहन पर गणपति, अंकुरार्पण

19-02-2025 बुधवार
दिन - ध्वजारोहण
रात - हंसवाहन

20-02-2025 गुरुवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन
रात - चंद्रप्रभावाहन

21-02-2025 शुक्रवार
दिन - भूतवाहन
रात - सिंहवाहन

22-02-2025 शनिवार
दिन - मकरवाहन
रात - शेषवाहन

23-02-2025 रविवार
दिन - तिरुच्चि उत्सव
रात - अधिकारनंदिवाहन

24-02-2025 सोमवार
दिन - व्याघ्रवाहन
रात - गजवाहन

25-02-2025 मंगलवार
दिन - कल्पवृक्षवाहन
रात - अश्ववाहन

26-02-2025 बुधवार
दिन - रथ-यात्रा
रात - नंदिवाहन (महाशिवरात्रि)

27-02-2025 गुरुवार
दिन - पुरुषामृगवाहन
रात - तिरुच्चि उत्सव कल्याणोत्सव

28-02-2025 शुक्रवार
दिन - सूर्यप्रभावाहन में नटराजस्वामी, त्रिशूलस्नान
रात - ध्वजावरोहण, रावणासुरवाहन

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthanams
Printing on 25-01-2025 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for India under
RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2024-2026 "LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2024-2026" Posting on 5th of every month.